

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 17 दिसम्बर - I-2021



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

Rs. 8.50

‘दीप जलाकर’ उमंग-उत्साह के साथ मनाया दीपोत्सव

मुख्यालय के पाँचों परिसर रोशनी से जगमगाये | संस्थान का 86वां स्थापना दिवस व ‘लक्ष्मी’ का जन्मदिन मनाया



दीपावली पर...

सभी परिसर में वरिष्ठ भाई-बहनों ने केक काटकर सबके साथ मनाई खुशियाँ



शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारी संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी(लक्ष्मी) के 73वें जन्मदिवस को दीपावली के साथ संस्थान के मुख्यालय में बहुत ही उमंग-उत्साह के साथ मनाया गया। संस्थान के शांतिवन के डायमण्ड जुबली हॉल में दीप प्रज्वलित कर यह उत्सव मनाया गया। संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने जन्मदिन एवं दीपावली की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि दीपावली नए युग की स्थापना का यादगार पर्व है। हमें इस विश्व से अज्ञान अंधकार को मिटाकर ज्ञान की रोशनी फैलाने वाला दीपक बनना है। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. मुन्नी

दीदी(लक्ष्मी) ने दादी प्रकाशमणि जी के साथ बिताए हुए दिनों को याद करते हुए कहा कि मैं सन् 1969 में ही इस संस्था में आ गई थी। मैंने दादियों की उंगली पकड़कर इस अध्यात्म के मार्ग पर चलना सीखा। आज दादियों के साथ-साथ आप सभी लोगों के विश्वास ने मुझे यज्ञ संभालने की जिम्मेदारी दी। हमारा अनुभव रहा है कि जीवन में आगे बढ़ने की एकमात्र राह है, सबको सुख दे और सबकी दुआएं लो। साथ ही साथ सबके प्रति शुभ व श्रेष्ठ भावना रखो। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका एवं ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशिका डॉ. ब्र.कु. निर्मला दीदी ने कहा कि दीपावली का त्योहार हम यज्ञ की स्थापना और दादियों के समर्पण के रूप में मनाते हैं। दीपावली पर्व हम

सभी आत्माओं के दीप जगने की यादगार है। जब दीप जग जाता तब भारत की धरती पुनः हेविन बन जाती है, जहाँ सुख शांति समृद्धि अपार होती है। संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई ने कहा कि आज का दिन हम सभी के लिए बहुत ही विशेष है, क्योंकि इसी दीपावली के दिन पर ही प्रजापिता ब्रह्मा ने अपनी चल व अचल सम्पत्ति को संस्थान की बहनों को अर्पित कर दी और इस संस्थान का विधिवत शुभारंभ हुआ। और तब से, 1937 से ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् दादी प्रकाशमणि जी ने भारतीय संस्कृति और परमात्म संदेश को सारे विश्व में पहुंचाया। हमें बहुत ही खुशी है कि इसी परंपरा के अनुरूप, उसी तरह से आज मुन्नी



मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी



संयुक्त प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी(लक्ष्मी)

दीपावली और संयुक्त प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी(लक्ष्मी) के जन्मदिन के शुभ संयोग को बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया एवं संस्थान के सभी वरिष्ठ भाई-बहनों ने केक काटकर सभी का मुख मीठा कराया। संस्थान में चारों ओर उमंग और उत्साह का वातावरण देखते ही बनता था। सभी ने एक-दूसरे को शुभकामनाएँ दीं और मुन्नी दीदी की लक्ष्मी उग्र की कामना की। इसके साथ ही दिव्य गीत और आध्यात्मिक सांस्कृतिक मनोरंजन के कार्यक्रम का भी सुंदर आयोजन किया गया।

दीदी यज्ञ को संभाल रही हैं और सुचारू रूप से आगे बढ़ रही हैं। संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. शीलू दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गीता दीदी ने मुन्नी दीदी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं दीं। इस कार्यक्रम में

ज्ञानामृत पत्रिका के मुख्य संपादक ब्र.कु. आत्मप्रकाश, शांतिवन प्रबंधक ब्र.कु. भूपाल, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु. शशी, डॉ. सविता, डॉ. अशोक मेहता, डॉ. सतीश गुप्ता, ब्र.कु. अशोक गाबा, ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. अवतार तथा अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों समेत

कई लोग उपस्थित रहे। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. ऊषा दीदी और ब्र.कु. सुधीर भाई ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। अहमदाबाद मेमनगर की कुमारियों ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। इसके साथ ही दीदी को पुष्पों और मालाओं से सम्मानित किया गया।



ज्ञानसरोवर। दीपावली कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से डॉ. अशोक मेहता, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. ब्र.कु. प्रताप मिश्रा, ग्लोबल हॉस्पिटल, राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मिणी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शशिप्रभा दीदी, राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई तथा अन्य। सभा में संस्थान के अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों दिखाई दे रहे हैं।



कार्य प्रबंधन

दो मित्र रोज रात्रि पढ़ाई के लिए इकट्ठे होते। मकसद था पढ़ाई कर उच्च श्रेणी में आना है। परन्तु उन दोनों का एक-दूसरे के साथ बातों में ही समय बीत जाता था। तरह-तरह की बातों की आदत पड़ गई, पढ़ाई एक तरफ छूट गई। जब पूछो तो कहते समय कहाँ मिलता है। ऐसा सिलसिला चलता रहा, वक्त बीतता रहा और परीक्षा का समय नज़दीक आ पहुँचा। परिणाम आया तो मन के स्वप्न साकार नहीं हो पाये।

असफल होने का सरल उत्तर था कि वे समय प्रबंधन न कर पाये। कार्य प्रबंधन और समय प्रबंधन के बीच संतुलन बनने पर ही सफलता के फल को प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए समय प्रबंधन के विशेषज्ञों का कहना है कि आपको दो बिन्दु पर ध्यान देना चाहिए:-

1. आपके दिन की शुरुआत 'टू टू लिस्ट' से करें यानी आज आपको कौन से काम करने हैं।

2. काम को उनकी वरीयता के हिसाब से नंबर दें।

क्या-क्या करना है उसका अनुसंधान और कब करना है, उसका प्रबंधन जरूरी है। बिना समय प्रबंधन अपने आप कुछ नहीं होगा। आपने कई बार महसूस किया होगा कि रोजमर्रा के काम में ही इतना समय चला जाता है कि वास्तव में आप जो करना चाहते हैं उसके लिए समय ही नहीं बचता।

इसी को समझाने के लिए एक प्रोफेसर ने छात्रों के सामने एक खारी जार रख दिया और साथ में चार चीज़ें थीं - गोल्फ बॉल, कंचे, रेत और पानी। उन्होंने पहले, जार में गोल्फ बॉल डाली जार भर गया। बाद में उन्होंने कंचे डालकर जार को हिलाया तो बॉल के बीच में कंचे समा गये। जार को फिर से हिलाकर रेत डाली, जो बाकि जगह में समा गई।

फिर उन्होंने बोतल से पानी डाला, जो रेत के कण के बीच की सूक्ष्म जगहों पर भर गया। लेकिन अगर जार में डालने वाली चीज़ का क्रम अलग होता तो? अगर जार को पहले ही रेत से भर देते तो कंचे के लिए जगह ही नहीं बचती। इस प्रोफेसर ने वरीयता का सिद्धान्त समझाया कि ये जार हमारा जीवन है। गोल्फ बॉल सबसे पहले किए जाने वाले कार्य हैं। जैसे आपका परिवार, स्वास्थ्य, व्यवसाय आदि। कंचे दूसरे क्रम में, यानी जो कार्य कम महत्वपूर्ण हैं, जैसे घूमना-फिरना, शौक, मनोरंजन वगैरह। रेत जीवन की दूसरी छोटी-छोटी बातें हैं। लेकिन हम जीवन को ऐसी छोटी-छोटी बातों से ही भर देते हैं। और महत्वपूर्ण कार्य के लिए हमारे पास समय ही नहीं बचता।

इसलिए जीवन में वरीयता तय करना अनिवार्य है। हमें पता हो कि जीवन में कौन-कौन से कार्य गोल्फ बॉल जैसे हैं, कौन-से कंचों जैसे और कौन-से रेत की तरह। इसके बाद अगर हम जीवन को गोल्फ बॉल से भर दें तो हमारा जीवन भरा-भरा लगेगा। बाकि चीज़ें अगर कम होंगी तब भी हमें अफसोस नहीं होगा। वैसे हकीकत यह है बाकि चीज़ें अपने आप ही सेट हो जाएंगी जैसे कंचे, रेत और पानी ने जार में जगह बना ली। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि वरीयता कैसे तय करें? हम अपने कार्यों को चार हिस्सों में बांट सकते हैं।

पहला है अर्जेंट और जरूरी। दूसरा, अर्जेंट नहीं लेकिन जरूरी। तीसरा, अर्जेंट लेकिन जरूरी नहीं। चौथा न ही अर्जेंट और न ही जरूरी।

जीवन के सारे काम इन चारों श्रेणियों में समा जाते हैं। इसमें हमारा ज्यादातर जीवन पहले और चौथे हिस्से में ही समाप्त हो जाता है। रोजमर्रा की इमरजेंसी से थक-हारकर व्यक्ति मनोरंजन का सहारा लेता है। और थोड़ा चैन की सांस लेता है, फिर वही इमरजेंसी की आग में कूद पड़ता है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनका जीवन पहली और तीसरी श्रेणी में ही बीतता है। उन्हें सारे काम जरूरी लगते हैं। लोकप्रियता का मुखौटा पहने रखने में या सबको खुश रखने के प्रयास में वे जीवन का वास्तविक आनंद लेने से चूक जाते हैं। लेकिन महान लोग चौथे क्रम को छोड़ देते हैं। वे ज्यादातर समय दूसरी श्रेणी में ही बिताते हैं। ये ही गेम चेंजर हैं। जो काम जरूरी है लेकिन उन्हें तत्काल करने की जरूरत नहीं है। उन पर हम ध्यान नहीं देते, टालते हैं। सफल लोग इस श्रेणी में ही ज्यादा सक्रिय रहते हैं।

'चेंज योर हैबिट्स' चेंज योर लाइफ के लेखक थॉमस कार्लाइल ने अपनी मेहनत के बलबूते पर अरबपति बने, 233 लोगों को 5 साल तक अध्ययन किया। इनके जीवन में जो आदतें एक समान देखने को मिलीं, वे थीं - 1. वे सुबह जल्दी उठते हैं। 2. खूब पढ़ते हैं। 3. कसरत को प्राथमिकता। 4. समय बर्बाद करने वाले कार्यों से दूर रहते हैं। अध्ययन से स्पष्ट है कि सफल व्यक्ति दूसरी श्रेणी में ज्यादा सक्रिय हैं और चौथे से बहुत दूर रहते हैं। ब्रह्मा बाबा के जीवन में हमने ये चार चीज़ें देखी हैं। उनका कोई भी काम कभी टाला नहीं गया। और व्यर्थ प्रवृत्ति में उन्होंने कभी भी, एक पल भी बर्बाद नहीं किया। तो आइए हम उन महान पुरुष के मार्ग पर चलकर सफलता के आसमान को छूएं।

बीजरूप अवस्था अर्थात् सर्व शक्तियों के स्वरूप में स्थित होना



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

चाहे सुख की या चाहे दुःख की बात जब दिल में लग जाती है ना तो वो जल्दी भूल नहीं सकते हैं, इसलिए बाबा कहते हैं दिल से मुझे याद करते रहो। कहते भी हैं एक बाबा दूसरा न कोई, अगर कोई तीसरा है तो उनका तीसरा नेत्र बंद हो जाता है। जब तीसरा नेत्र ही बंद हो जाता है तो फिर क्या देखेंगे! इसलिए बाबा को सिर्फ दिल चाहिए और वो भी सच्ची साफ दिल। वैसे भी जिससे जितना गहरा सम्बन्ध होता है, उतना न चाहते हुए भी याद आती है। हम सभी कोशिश तो यही करते हैं कि बाबा के सिवाए और कुछ याद नहीं आवे लेकिन फिर भी अगर याद आती है तो जरूर उससे मेरेपन का सम्बन्ध होता है और जितना गहरा सम्बन्ध होता है, उतनी याद स्वतः आती है। और दूसरी चीज़ होती है प्राप्ति, बिना प्राप्ति के कोई याद नहीं आता है। जब हमारा मन थोड़ा चंचल होता है तो उस समय याद करने की कोशिश करते हैं लेकिन याद नहीं आती है क्योंकि पुराने संस्कार का वार होता है। ऐसे समय पर एक-एक प्राप्ति की डिंटेल को अपने मन में सोचो। बाबा ने क्या बनाया और क्या दिया? अपने मन को इसमें बिजी कर दो तो फिर वो दूसरी बातें भूल जायेंगी, बाबा की याद ऑटोमेटिकली आयेगी।

अभी तो बाबा ने कहा है सिर्फ बाबा शब्द नहीं कहो, मेरा बाबा कहो। बाबा में जितना मेरापन होगा, मेरा है, मेरे लिए आया है, तो जहाँ मेरा होता है वहाँ अधिकार होता है। जहाँ अधिकार होता है, वहाँ याद स्वतः आता है। तो बाबा ने हमको मास्टर सर्वशक्तिवान की अर्थारिटी

जो दी है और साथ में जो अधिकार दिये हैं उसको भी याद करो। अगर अर्थारिटी की याद होगी तो मन यहाँ-वहाँ चंचल नहीं होगा क्योंकि अर्थारिटी वाले की ऑर्डर मानी जायेगी इसलिए बाबा ने कहा अधिकार भी रखो, तो अर्थारिटी में भी रहो यानी स्मृति की सीट से उतरो नहीं, उस सीट पर बैठ ऑर्डर करो तो आपका मन सदा जहाँ चाहो, जितना समय चाहो, उतना समय वहाँ रह सकता है। फिर वेस्ट थॉट नहीं आयेगी क्योंकि अपनी अर्थारिटी में हैं।

ज्वालारूप क्या है? यह भी याद की ही एक स्टेज है। देह अभिमान से निकल देही अभिमान बनना जिसको सोल कॉन्सेप्शन कहते हैं। फिर ज्ञान की जो भी बातें हैं, वरदान, स्लोगन जो भी सुनते हैं उसमें मनन करना। ज्ञान के मनन से मन को समर्थ बनाना। फिर रूहरिहान भी कर सकते हैं। और लास्ट में पॉवरफुल स्टेज है बीजरूप। बाबा ने यह स्टेज हमें लकीर खींचके दी है, तो इस लकीर से दूर नहीं जाओ तो व्यर्थ खत्म हो जायेगा। बीजरूप अवस्था का मतलब है बिल्कुल सर्वशक्तियों के स्वरूप में स्थित हो जाना। सर्वशक्तिवान की सर्वशक्तियों की अर्थारिटी में रहना, तो सर्वशक्ति के स्वरूप की स्मृति हो। अपने में पॉवर हो कि यह सर्व शक्तियाँ जैसे आत्मा में समाई हुई हैं। वो स्वरूप हो बीजरूप का। तो यह जो बाबा कहता है ज्वाला रूप बनना, तो ज्वाला रूप माना जो बीजरूप की स्थिति है, उसी में रहना लेकिन उसमें भी विशेष लाइट हाउस, माइट हाउस के स्वरूप में स्थित होना। सर्वशक्तियों के लाइट रूप में स्थित होना, यह है पॉवरफुल स्टेज।

ऐसे तपस्वी बनो...जो सब कमजोरियां समाप्त हो जायें



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा ने हमें जो मुख्य सब्जेक्ट दी हैं कि हे बच्चे अब तुम्हें सच्चा डायमण्ड बनना है अर्थात् सम्पूर्ण दैवी गुण खुद में भरकर सम्पन्न बनना है, उसके लिए तुम्हें याद की यात्रा में रहना है। तो हम कहाँ तक इस सब्जेक्ट में पास हैं? ज्ञानी तू आत्मा तो बन गये, सेवा की भी बहुत लगन, उमंग-उल्लास सभी में है। परन्तु जो हमारे में संस्कार परिवर्तन की शक्ति चाहिए, जो राजयोग में सभी को अष्ट शक्तियां सुनाते, जिस पर बाबा की अनेकानेक मुरलियां चली हैं कि तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो, जिस घड़ी, जिस शक्ति का आहवान करो वह शक्ति हाज़िर हो जाए। ऐसी हम शिव की शक्तियां हैं?

तो अब हमें अपने पुराने 63 जन्मों के विकर्मों को विनाश कर कर्मातीत बनना है- ये है हमारी अन्तिम सब्जेक्ट। जिस सब्जेक्ट

के साथ में बाबा कहते त्यागी बनो। त्याग, तपस्या और वैराग्य। सेवा की सब्जेक्ट का पलड़ा तो भारी है, सेवायें तो चली ही रही हैं। लेकिन अपने आप से पूछो कि मैं बेहद का वैरागी हूँ? मैं सबसे उपराम हूँ? बेहद के वैराग्य की गहराई में जाओ। सेवायें, सेन्टर उनसे भी बेहद के वैरागी।

दूसरा - हर एक अपने आपसे पूछो कि मेरे अन्दर कहाँ तक कम्पलीट त्याग है या कौन-सा सूक्ष्म अन्दर में चोर है, जो वैराग्य आने नहीं देता? चाहे सेन्टर, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक, चाहे अच्छे, चाहे कोई भी हैं, बाबा के सिवाए बाकी कहाँ भी मेरी सूक्ष्म रग है? ममता है? मेरापन है? अपने आप का भी बहुत नशा है, नाजुक हूँ? अलबेली हूँ? सुस्त हूँ? जिद्दी हूँ? परचिंतन करने वाली हूँ? या मैं इन सबसे उपराम हूँ? सूक्ष्म कौन-सा मेरे में अभी चोर है या नहीं है? मैं कम्पलीट त्यागी हूँ या

मैं इन संस्कारों की पालनहार माँ हूँ? जवाब देते क्या करें - मेरे में यह कमजोरी है ना।

कमजोरियों की एलाऊ है क्या? कौन-सी मुरली में एलाऊ है? किस डिक्शनरी में एलाऊ है? हमारी ईश्वरीय डिक्शनरी में एलाऊ है? श्रीमत में है? या कहेंगे इतना तो बाबा मैंने समझा ही नहीं था कि ऐसा भी मरना होगा। कई फिर कहती

मैं साफ कहती हूँ ना कि मैं कमजोर हूँ, मेरे में बाबा इतनी मरने की शक्ति नहीं है ना, क्या ये बाबा को जवाब देते?

कई कहते मैं बहुत थक गई हूँ, बस इससे तो मेरे को उठा लो न बाबा, बस मुझे कुछ नहीं चाहिए। यही आप लोगों की रूहरिहान है ना? या ये चैलेन्ज की है कि बाबा हम सारे विश्व पर विजय पाने वाले विजयी सितारे हैं? अगर बाबा के हम मददगार हैं, तो बाबा ने तो अभी तक कहा ही नहीं है कि बच्चे फुलस्टॉप। तो हम क्यों थक जाते हैं?

ऐसे योग की रूचि अपने में भरों जो मेरा आधार, मेरा प्यार, मेरा प्राण, मेरी नींद, मेरा आराम, सबकुछ मेरा बाबा। मीठे बाबा की यादों में समाये रहो, गहरी योग की स्थिति का अनुभव करो। अशरीरी बन, अशरीरी स्थिति क्या होती, उसका अनुभव करो। कछुए की तरह सब सेवाओं को समेट करके बाबा के लव में लीन हो जाओ। अगर कोई के पास सूक्ष्म अपने पीछे के संस्कारों की, कोई भी कमी की, कुछ भी रियलाइजेशन हो तो बाबा ने विधि दी है कि उनको लिखकर क्लीयर कर दो तो बुद्धि खाली हो जाए। जिससे बुद्धि एकदम साफ हो जाए। दिल साफ मुराद हासिल।

बाबा के सामने कोई भी ऐसे-वैसे बोलता तो सदा के लिए वो दिल से उतर जाता। तो अब ऐसी तपस्या करो जिससे कोई भी विघ्न है, सेन्टर्स के, यज्ञ के, तेरे-मेरे के वह सब खत्म हो जायें। यह तपस्या है ही विघ्नों को विनाश करने की। अब अपनी मर्जी छोड़ मालिक की जो मर्जी है उस परचलो। बाबा की श्रीमत ही जीवन का सच्चा शृंगार है।

बाप की श्रीमत सिर-माथे...

बाप समान



राजयोगिनी दादी जानकी जी

पहले बाबा कहते थे बच्चे दूसरों को भी आप समान बनाओ। लेकिन आप समान बनाना माना अपने जैसा बनाना, मेरे में कुछ कमी-कमजोरियां भी होंगी तो उस बिचारे की क्या गति होगी? अभी बाबा कहते हैं बच्चे बाप समान बनो और बनाओ। बाबा को सामने रखके इशारा दो ताकि वह भी समानता में आ जाये, ऊंचे पुरुषार्थ में समानता आ जाये। हर बात में न्यारे बनने में और भाग्यवान बनने में, खुशानसीब बनने में समान तो क्या, इससे भी आगे बढ़ें। कभी कोई बड़े ऊंचे महारथी को भी किसी से ईर्ष्या हो जाती है। वो नहीं चाहेंगे कि यह आगे चला जाये और मैं पीछे हो जाऊं। परन्तु सच्चा पुरुषार्थी इस बात को भी असुल नहीं देखता है। अपनी घोट तो नशा चढ़े, जो ओटे सो अर्जुन। जो आपेही करे वो देवता। तो हम किसी को देख करके आगे नहीं जा सकते हैं। गुण उठावे पर अपनी घोट तो नशा चढ़े। जो आपेही करे, बाबा को देख करके करे, वही देव पद पा सकता है। ऐसी अच्छी-अच्छी, ऊंची-ऊंची बातें हैं, उसको छोड़ करके हम बीच की बातों में क्यों रहें? जो खुद ही बीच भँवर में भटक रहा है, वह औरों को क्या रास्ता दिखायेगा! उनके संग में तो और ही भटकेंगे।

हरेक अपने पुरुषार्थ में एक बाबा को सामने रखे, सीधी राह पर चले। न इधर देखे, न उधर देखे, न पास्ट की बातों का कोई चिंतन करे। दिन-रात अपने पुरुषार्थ के लिए इतनी धुन लगी रहे तभी शंखध्वनि होगी, आवाज दूर तक पहुंचेगा। तो पुरुषार्थ ऐसा हो जो हमारा चिंतन शुद्ध, श्रेष्ठ बनता जाये। आपस में 10-15 होंगे तो कहेंगे मैं अच्छी हूँ, और सब कहेंगे हाँ यह अच्छी है लेकिन जब मधुबन में 500-1000 के बीच में आयेंगे फिर देखें। अभी तो लाखों ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियां हो गये हैं, उसके बीच में बोले, हर कोई बोले हाँ यह अच्छा है। बाबा भी सर्टिफिकेट देवे ना!

तो अपने ऊपर इतना ध्यान रखना पड़ेगा। हमें न सिर्फ पास होना है, लेकिन पास विद ऑनर में आना है। जो एक मिनट भी बाबा को भूलेंगे वो पास विद ऑनर में नहीं आयेंगे। जो श्रीमत को सिरमाथे पर रखेंगे अपनी मनमत नहीं चलायेंगे वही पास विद ऑनर बनेंगे।



अहमदाबाद-गुज. राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, क्षेत्रीय संचालिका, ब्रह्माकुमारीज को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन द्वारा लॉकडाउन में कोरोना महामारी के दौरान मानवता के लिए लोक कल्याण में अपना अमूल्य योगदान देने हेतु 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' स्वीटजरलैंड से सम्मानित किया गया।

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन के राष्ट्रीय सचिव डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके और ओम शान्ति मीडिया के संपादक राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर ने राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी को सुख-शांति भवन, अहमदाबाद में 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' स्वीटजरलैंड प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. दमयंती दीदी, अति.क्षेत्रीय संचालिका, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, मेहसाणा, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नेहा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नंदिनी दीदी समेत क्षेत्र के अन्य वरिष्ठ भाई-बहनें उपस्थित रहे।



शांतिवन। कारीगरों की सेवा के लिए विश्वकर्मा ग्रुप ऑफिस का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. भूपाल भाई, ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

एवररेडी होने के लिए पहले... रेडी हो जाओ

अगर आपकी बाबा से बात हुई नहीं, उससे सर्व सम्बन्धों का रसास्वादन किया नहीं तो समय गुजरता जा रहा है। यह मुख्य वस्तु आपको प्राप्त हुई नहीं तो बाकी उपलब्धि जीवन में क्या हुई? जिसको गोप-गोपियों का अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है, जिसको भगवान के अंग-संग रहना कहा जाता है, प्रभु मिलन कहा जाता है, वह मिलन क्या होता है, उसका आनन्द हमने लिया नहीं, तो हम एवररेडी कैसे रहेंगे? क्या पहले हम रेडी हैं? कोई पूछता है कि क्या आप तैयार हैं? कहते हैं, हाँ तैयार हैं। लेकिन कई लोग, तैयार हैं, यह कहने के बाद बाहर आने के लिए 15 मिनट लेते हैं। ऐसे तो नहीं कि समझ बैठे हैं अपने आपको रेडी लेकिन और कई काम बाकी हैं? हम बाबा से वर्षा लेने के हकदार हैं लेकिन तब जब हमारे सारे पुराने संस्कारों का परिवर्तन हो। सारे संस्कार परिवर्तन हो सकते हैं अगर आप अपने मन को भगवान को समर्पित कर देंगे। आपने तो जान लिया कि परमात्मा कौन है लेकिन आपसे वह क्या चाहता है, यह जान लिया?

भगवान के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया है?

हमारा उद्देश्य, हमारा मूलमन्त्र है, 'पवित्र बनों, योगी बनों'। हम इस स्लोगन को सब जगह सेन्टरों और अपने-अपने घरों में लगाते हैं। परमात्मा के मन में हमारे लिए क्या है? वह किस लिए इतनी दूर से आया है? बाबा हमें इतना प्यार करता है, कहता है कि बच्चे, तुम मेरे सिरताज हो, मेरे गले

का हार हो। तुम सिकीलधे बच्चों को मैं पलकों पर बिठाकर ले जाऊंगा। इतनी जिम्मेवारी लेता है। कहता है, तुम मेरे कुल के चिराग हो, मेरे नूरे रत्न हो, ब्राह्मण कुलभूषण हो, मेरे घर का श्रृंगार हो। इतना हमको कहता है, इतना प्यार करता है, अरे हमें उसकी बातें समझ में ही नहीं आ रही हैं! कोई हमें इतना प्यार करता जाये, इतना करता जाये तो हमारी प्रतिक्रिया क्या है? क्या हमारे में यह अंतर्ध्वनि नहीं आती कि

का स्तर और मापदण्ड जो बाबा ने बताया हुआ है, पवित्रता की जो परिभाषा बाबा ने दी हुई है, पवित्रता शब्द का जो विस्तृत अर्थ है, जिसे हमें ख्याल में रखना है, उस दृष्टि से आप अपने को देखें, फिर सोचें कि हम कहाँ तक पवित्र बने हैं। अगर ये सब अनुभव हमने नहीं किये तो कैसे एवररेडी हो पायेंगे?

मैं कह रहा था भगवान से बात करने के बारे में। मैं यह पूछता हूँ कि कौन है

हैं कि हरेक बात में कुछ अपवाद होते हैं। लेकिन इसमें कोई अपवाद या छूट नहीं हो सकती क्योंकि हम यहाँ आये ही हैं यह करने के लिए। क्या आप यह जानते हैं, परमात्मा से हम बातें कैसे कर सकते हैं? उससे मिलन हम कैसे मना सकते हैं? अलग-अलग सम्बन्धों का अनुभव कैसे कर सकते हैं? अगर ये सब अनुभव हमने नहीं किये हैं तो हम कैसे एवररेडी हो पायेंगे? इसके लिए अभ्यास की जरूरत

पवित्रता का स्तर और मापदण्ड जो बाबा ने बताया हुआ है, पवित्रता की जो परिभाषा बाबा ने दी हुई है, पवित्रता शब्द का जो विस्तृत अर्थ है, जिसे हमें ख्याल में रखना है, उस दृष्टि से आप अपने को देखें, फिर सोचें कि हम कहाँ तक पवित्र बने हैं। अगर ये सब अनुभव हमने नहीं किये तो कैसे एवररेडी हो पायेंगे? तो पहले हमें स्वयं को स्वयं में पवित्रता की पात्रता को अपनाकर रेडी करना होगा।

हम कितने निष्ठुर व्यक्ति हैं! कितने पत्थर दिल हैं! वो हमारे लिए परमधाम से आता है और हम वह भी नहीं कर सकते जो वह कहता है! योगी बनों, योगी बनों, योगी बनों लेकिन क्या हम योगी बन रहे हैं? पवित्र भी कहाँ तक बन रहे हैं? पवित्रता

जो भगवान से बात करना नहीं चाहता होगा? भगवान के साथ साजन-सजनी के रूप में, सखा-सखी के रूप में, मित्र-मित्र के रूप में, बन्धु-बान्धव के रूप में या पिता-पुत्र के रूप में या माता-पुत्र के रूप में कौन है बात करना नहीं चाहते? कहते

हैं। बाबा ने कई दफा कहा है कि एवररेडी रहो। एवररेडी बनने के लिए कई बातें और भी हैं जिनमें सबसे पहले हमें यह सोचना चाहिए कि क्या हमारे संस्कार बदले हैं? क्या हमारा व्यवहार बदला है? ज्ञान की



ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जो गहराई है उसे हमने समझा है? क्या योग की जो विविध स्टेजिस हैं, उन स्टेजिस की हमने अनुभूतियाँ की हैं? ऐसी स्टेज हमारी है कि बाबा जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये, जो खिलाये, जो पहनाये? उसका जो भी फैसला हो, वह हमें मंजूर है? अभी तक किन-किन गुणों का विकास हमारे में नहीं हुआ है? जिस स्टेज में हम स्थित होना चाहते हैं, उस स्टेज पर तुरन्त स्थित हो सकते हैं? अगर उत्तर 'हाँ' में है तो हम कह सकते हैं कि हम एवररेडी हैं। यह सोचने की और ध्यान देने की बात है। सोचना माना चिन्ता करना नहीं परन्तु बाबा कहते हैं कि बच्चों को ओना, फुरना रहना चाहिए। हमें आध्यात्मिक साधना करने की सात्विक चिन्ता रहनी चाहिए।

अभी समय कितना रह गया है! उसमें भी हम कितना समय व्यर्थ गंवाते हैं! संगमयुग की परम उपलब्धियों को छोड़कर छोटी-छोटी बातों में उलझे रहना, अटके रहना अच्छा नहीं है। दिन कट रहे हैं, हम तेरे-मेरे में लगे हुए हैं। इसलिए मैं समझता हूँ कि एवररेडी बनने के लिए 'योगी बनों और पवित्र बनों' के प्रैक्टिकल स्वरूप में हमें रहना है।



जशपुर नगर-छ.ग. ब्रह्माकुमारीज द्वारा कोरोना वॉरियर्स के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में विधायक विनय भगत, कलेक्टर महादेव कावरे, एस.पी. विजय अग्रवाल सहित सभी मेडिकल स्टाफ, रॉनियार क्लब, महिला शक्ति, सजल समूह, एरॉबिक ग्रुप, चाइल्ड डेवलपमेंट ग्रुप, पुलिस आदि को ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. डॉ. पी. सुथार द्वारा सम्मानित किया गया।



जम्मू। सेशन जज सुरेश शर्मा एवं श्रीमति शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी तथा ब्र.कु. डॉ. बिन्नी, पीएस एम्बेसडर, माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रविन्दर भाई तथा अन्य।



अम्बिकापुर-छ.ग. जन्माष्टमी पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता वी.के. सिंह, कार्य पालन अभियन्ता जल संसाधन संभाग बैकुण्ठपुर सुरेन्द्र दुबे, सरगुजा संभागीय उद्योग संघ महासचिव बी.एस. सिंह कटलरिया तथा सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी।



ढूँडला-रामनगर(उ.प्र.)। विधायक प्रेमपाल सिंह धनगर को गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. रेखा तथा ब्र.कु. तनु।



गवालियर-म.प्र.। राजेश हिगणकर, आई.पी.एस. को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रहलाद भाई। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।



आरा-बिहार। ज्ञान चर्चा के पश्चात् चित्र में भोजपुर जिले के कोइलवर में स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 47वीं बटालियन के अतिरिक्त कमाण्डेंट पीयूष कुमार तथा जवानों सहित सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन तथा ब्र.कु. रूपा बहन।



केरडारी-हजारीबाग(झारखण्ड)। ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में चर्च के फादर व नन्स, ब्र.कु. सरिता बहन तथा अन्य।



आमगाव-गोंदिया(महा.)। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में जिला राष्ट्रवादी कांग्रेस के अध्यक्ष विजय शिवणकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रत्नमाला दीदी, ब्र.कु. स्मिता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. वैशाली दीदी तथा ब्र.कु. ललिता बहन।



दीसा-गुज.। बी.सी.ए. कॉलेज में आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कॉलेज के प्रिन्सीपल हितेश भाई मर्ध, हीरा भाई, मेवा भाई, ब्र.कु. पायल बहन तथा ब्र.कु. भारती बहन।



पटना-खाजपुरा(बिहार)। ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में दानापुर आर.पी.एफ. के सीनियर कमाण्डेंट संतोष कुमार सिंह राठौर तथा वहाँ के सेवाकर्मियों, खाजपुरा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजू बहन, ब्र.कु. सिंधु बहन, ब्र.कु. मीरा बहन, ब्र.कु. रविन्द्र भाई, ब्र.कु. धर्मेन्द्र भाई तथा ब्र.कु. मनीष भाई।

मनसा सेवा द्वारा साकाश देने की विधि



ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे

जैसा कि आप सभी ने पिछले अंक में पढ़ा, जाना कि मनसा सेवा द्वारा साकाश देने की विधि में पहले प्रकार की सेवा कौन-सी है तो अब है दूसरे प्रकार की सेवा। दूसरे प्रकार की जो सेवा कही वो है वृत्ति द्वारा वायुमण्डल। जिस तरह से भावना का सम्बन्ध संकल्पों से है, उसी तरह वृत्ति का सम्बन्ध है दृष्टि के साथ। दृष्टि के साथ वृत्ति का बहुत गहरा सम्बन्ध है। ये भी सूक्ष्म स्तर की है। व्यक्ति जो देखता है, जिस एंगल से देखता है वही उसकी वृत्ति के अन्दर बात समा जाती है। अगर देखने का दृष्टिकोण पॉजिटिव है तो हमारी वृत्ति अच्छी क्रियेट होगी। और देखने का दृष्टिकोण हमारा निगेटिव है तो हमारी वृत्ति उस आत्मा के प्रति या टोटल जो हमारी वृत्ति से वायब्रेशन निकलते हैं वो वायब्रेशन निगेटिव होंगे।

विज्ञान ने अब इस बात को समझा है कि हरेक व्यक्ति के आस-पास, या हरेक व्यक्ति से वायब्रेशन निकलते हैं। किसी के निगेटिव वायब्रेशन तो किसी के पॉजिटिव वायब्रेशन होते हैं। लेकिन उन वायब्रेशन से उसका और तैयार होता है। उसके चारों ओर एक प्रभामंडल तैयार होता है। और

जितना ये रिलिज होता जाता है वायब्रेशन या प्रभामंडल, उतना वो वायुमंडल को क्रियेट करता है। तो पूरा वायुमंडल उस हिसाब से बदलने लगता है। जैसे आप किसी के घर में जाओ, वहाँ उस परिवार में प्रतिदिन झगड़ा होता हो तो वहाँ जाने के बाद जब भी आप बैठेंगे, आपके अन्दर आता है कि चलो जल्दी उठें यहाँ से। लेकिन आप उस वातावरण से मधुबन के वातावरण में आये। तो क्या महसूस होता है कि और दो दिन रहने को मिल जाता। ये वातावरण जो है वो आकर्षित करता है। जिसके अन्दर एक प्रकार का मैग्नेटिज्म है। क्योंकि लम्बे समय से बाबा यहाँ रहा हुआ है, दादियां रही हुई हैं तो यहाँ एक

जितना ज़्यादा हमारा अभ्यास होगा, उतनी हमारी कम्पलीट पर्सनैलिटी चेंज होती जायेगी। और वृत्ति के द्वारा वायुमंडल क्रियेट हो जायेगा।

वायब्रेशन जो है बना हुआ है। जो वायुमंडल के अन्दर फैल गया है। और इतना हाई पॉवर का है जिससे खुशी मिलती है, चार्ज हो रहे हैं ये फील होता है।

जब हमारे वायब्रेशन शुद्धि के होंगे तो जो अंतिम समय आत्मार्थे आयेगी वो दूर से उस शुद्ध वातावरण की ओर जैसे आकर्षित होंगी। और कहेंगी कि हमें अंचलि दे दो। जिसको बाबा कहते हैं आप लाइट हाउस, माइट हाउस बन जायेंगे। इसीलिए बाबा भी हम बच्चों को कहते हैं कि बच्चे हमेशा एक पॉजिटिव दृष्टि, दृष्टिकोण आपका जितना रहेगा उतनी

आपकी आंतरिक वृत्ति का शुद्धिकरण होता जायेगा। इसीलिए बाबा हमें मुरली के माध्यम से भी अलग-अलग दृश्य दिखाते हैं। कभी बाबा सतयुग की बातें करके हमें दृश्य दिखाता है। कभी परमधाम की बातें करके हमें वो दृश्य दिखाता है। कभी बाबा कहता है कि बच्चे वतन में आ जाओ, मेरे साथ बैठो वो दृश्य दिखाता है। ये अलग-अलग दृश्य जो बाबा ने दिखाये हैं मुरली के माध्यम से, जितना हम इन दृश्यों को अंतरचक्षु से देखते जाते उतना हमारी वृत्ति वैसी बनने लगती है।

इसीलिए बाबा जो हमको रोज मुरली में कहते हैं, बच्चे आत्म अभिमानी बनो। तो क्यों बाबा ये शब्द कहते हैं? क्योंकि आत्म अभिमानी बनने में आप 100 प्रतिशत अपनी वृत्ति का शुद्धिकरण करते हो। जब कर्म से निवृत्त होकर आत्म अभिमानी स्थिति में बैठते हैं अर्थात् आत्मा के सातों गुणों को इमर्ज करते हैं। जितना हम इमर्ज करते हैं उतना हमारी वृत्ति के अन्दर वो रिलीज होने लगते हैं। उसी से हमारा प्रभामंडल बनता है। और उन सातों गुणों में ही वो मैग्नेटिज्म है। मैग्नेटिज्म बनने के लिए मुझे बार-बार आत्म अभिमानी स्थिति में जाने का अभ्यास करना होगा। जितना ज़्यादा हमारा अभ्यास होगा, उतनी हमारी कम्पलीट पर्सनैलिटी चेंज होती जायेगी। और वृत्ति के द्वारा वायुमंडल क्रियेट हो जायेगा। बड़ी दादी के लिए हमेशा ये बात सुनते थे वो जहाँ जाती थीं वहाँ का पूरा वातावरण चार्ज कर देती थीं। तो इसी तरह मैग्नेटिक पर्सनैलिटी हम अपनी भी क्रियेट कर सकते हैं। जिससे अनेक आत्माओं को अंचलि मिलेगी।

- क्रमशः



नवापारा-राजिम(छ.ग.)। चरण दास महंत, अध्यक्ष, विधानसभा छ.ग. व अमितेश शुक्ल, विधायक, राजिम विधानसभा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन व ब्र.कु. नारायण भाई।



राजगढ़-म.प्र.। शिव वरदान भवन में श्री कृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता रघुनंदन शर्मा, पूर्व विधायक हेमराज कल्पोनी, यूको बैंक मैनेजर जितेन्द्र यादव, कैरियर कॉन्वेंट स्कूल के संचालक राकेश पांडे, भाजपा नेता श्याम गुर्जर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन, शिक्षिका सुष्टि पांडे एवं सजे राधा-कृष्ण।



पटना-बिहार। पटना चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के शाहू जैन हॉल में इंद्रप्रस्थ एजुकेशनल रिसर्च एंड चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित 'ग्लोबल राइजिंग स्टार अवॉर्ड्स 2021' कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. मोनिका बहन, छोटा उदपुर, गुज. को सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'ग्लोबल राइजिंग स्टार अवॉर्ड' से काजल यादव, नेशनल प्रेसीडेंट, आई.ई.आर.सी.टी., दिल्ली, मुख्य अतिथि आर्ट एंड कल्चर स्टेट मिनिस्टर आलोक रंजन झा तथा पथ निर्माण राज्यमंत्री नितिन नवीन ने सम्मानित किया।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क - M- 9414006096, 9414182088, Email-omshantimedia@bkiiv.org

सदस्यता शुल्क - भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,

कृषक सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या

बैंक ड्राफ्ट (पेबल ए. सी.टी.एन. आबू रोड) द्वारा भेजें।

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)

ACCOUNT NO:- 30826907041

ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA

IFSC - CODE - SBIN0010638

BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya

Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on E-Mail -

omshantimedia.acct@bkiiv.org or

Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087



आप अपने बच्चों को भरपूर प्यार, स्नेह दे सकते हो, पर क्या अपनी सोच उन्हें दे पाओगे? यह पीढ़ी अपनी सोच, तर्क और महत्वाकांक्षाओं में जीने वाली है। इनकी जीवनशैली में यदि ज़्यादा हस्तक्षेप करेंगे तो शायद यह जवाब सुनने मिल जाए कि आप माता-पिता हो तो हम आपके द्वारा इस संसार में आए हैं, पर आप हमें लाए नहीं हो। कितने ही माता-पिता जन्म से पहले अपनी संतान के लिए दावा करते हैं कि यह वैसी ही होगी जैसा हम चाहते हैं। परन्तु अधिकतर का दावा खोखला निकल जाता है। इन दिनों माता-पिता



बच्चों को जीने की कला सिखाएं

अपनी संतान के लिए एस्केलेटर (यंत्रचालित सीढ़ी) बन रहे हैं, जिसकी मदद से वे बिना परिश्रम ऊपर चढ़ सकते हैं, नीचे उतर सकते हैं। जबकि हमें बनना ऐसी सीढ़ी चाहिए जिसमें सहारा तो हमारा हो, पर परिश्रम बच्चों को करना

पड़े। यह सीढ़ी बच्चों को गिरने नहीं देगी, पर हर कदम पर उनको परिश्रम करना भी सिखाएगी। हर माता-पिता को ध्यान रखना होगा कि संतान को केवल दुनियादारी का ज्ञान ही नहीं देना है, उन्हें जीवन की बारीकियां, उनको जीने की कला भी सिखाना है।

बच्चों के साथ एक कहावत है - वे सुनकर कम और देखकर ज़्यादा सीखते हैं। इसलिए जिस प्रकार धर्म जानने से ज़्यादा जीने का मामला है, वैसे ही बच्चों के लिए लालन-पालन में माता-पिता की बुद्धि से ज़्यादा उनका आचरण काम करता है।



मथुरा-रिफाइनरी नगर(उ.प्र.)। डेयरी विकास, पशुपालन एवं मत्स्य पालन राज्यमंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ब्लेसिंग कार्ड देते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा बहन।



जयपुर-सोडाला(राज.)। रेखा राठौड़, पार्षद एवं जयपुर जिला मंत्री को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. स्नेह दीदी।



दिल्ली-कंझावला(बुल्ला कॉलोनी)। सेवाकेन्द्र में आने पर स्थानीय पुलिस स्टेशन के एस.एच.ओ. जर्नल सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा बहन।



आज़मगढ़-उ.प्र.। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सुधीर कुमार सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजना बहन।



उज्जैन-म.प्र.। सांसद अनिल फिरोजिया के साथ ईश्वरीय ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु. मंजू बहन।



बिलासपुर-राजकिशोर नगर(छ.ग.)। वार्ड 51 की पार्षद संध्या तिवारी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. उमा बहन।



दुर्ग-छ.ग.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् मेयर धीरज बाकलीवाल को ईश्वरीय पत्रिका व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रूपाली बहन।



मुम्बई-घाटकोपर। प्रसिद्ध फिल्म एक्टर एंड डायरेक्टर महेश मांजरेकर व उनके परिवार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकु बहन।



जितूर-महाराष्ट्र। ज्ञान चर्चा के पश्चात् पूर्व विधायक रामप्रसाद बोर्डेकर को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन।



रसड़ा-उ.प्र.। रसड़ा कोतवाली के कोतवाल नागेश उपाध्याय को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जागृति बहन।



पन्ना-म.प्र.। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् कलेक्टर संजय कुमार मिश्रा व उनकी धर्मपत्नी के साथ उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन।



सांगरहेड्डी-आ.प्र.। राजाकृष्ण, आई.ए.एस., एडिशनल कलेक्टर, लोकल बॉडीज को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. बहन।



अलीराजपुर-म.प्र.। विधायक नागर सिंह चौहान को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण भाई व ब्र.कु. माधुरी बहन। साथ हैं डॉ. कन्हैयालाल।



भुज-गुजराट। कल्पेश भाई गोस्वामी, स्पेशल पब्लिक प्रॉसिक््यूटर सीआईडी एंड एंटी करप्शन ब्यूरो, स्टेट गवर्नमेंट एवं उनकी धर्मपत्नी वर्षा बहन के साथ हैं ब्र.कु. रीना बहन।



छतरपुर-म.प्र.। डी.आई.जी. विवेक राज सिंह के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. सुमन तथा ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई।



ग्वालियर-म.प्र.। नई दुनिया समाचार पत्र की टीम को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. ज्योति बहन तथा ब्र.कु. सुरभि।



दिल्ली-पंजाबी बाग। सेवाकेन्द्र पर आमंत्रित क्षेत्रीय पार्षद एवं पूर्व डिप्टी मेयर कैलाश सांकला के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ब्लेसिंग कार्ड देते हुए ब्र.कु. कोकिला बहन।



नरवाना-हरियाणा। जन्माष्टमी पर्व पर आयोजित झाँकी में प्रसिद्ध समाजसेविका अनिता गोयल को गुलदस्ता एवं ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन तथा ब्र.कु. ममता बहन। साथ हैं महेन्द्र गोयल, डॉ. साधु राम शर्मा, विनोद गोयल तथा अन्य।

काली मिर्च के फायदे अनेक, पर... हैं कुछ नुकसान भी

सलाद, शिकंजी या सैंडविच कुछ भी बनाओ, बस ऊपर से थोड़ी काली मिर्च छिड़क दो, तो खाने का स्वाद बढ़ जाता है। हालांकि, काली मिर्च सिर्फ इन्हीं चीजों का जायका नहीं बढ़ाती, बल्कि यह किसी भी खाने का स्वाद बढ़ाने का काम कर सकती है। साथ ही यह सेहत पर कई तरह के लाभकारी असर भी डाल सकती है, जिस बारे में आइए हम जानते हैं...

काली मिर्च के औषधीय गुण

काली मिर्च में कई तरह के औषधीय गुण पाए जाते हैं। जिससे कई रोगों को दूर रखा जा सकता है। साथ ही कई रोगों के इलाज में मदद मिल सकती है। इसमें मुख्य रूप में एंटी-फ्लैटुलेंस, ड्यूरेटिक, एंटी-इंफ्लेमेटरी, डाइजेस्टिव, मेमोरी इन्हांसर और पेन रिलीवर गुण पाए जाते हैं। ये सभी गुण विभिन्न समस्याओं के इलाज में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा भी काली मिर्च के और भी कई औषधीय गुण व फायदे हैं, जिनके बारे में आप नीचे विस्तार से जानेंगे।

काली मिर्च के फायदे

पाचन के लिए

आहार में काली मिर्च का उपयोग करने से पाचन संबंधी समस्याओं से निजात मिल सकती है। एनसीबीआई की वेबसाइट पर प्रकाशित एक वैज्ञानिक शोध के अनुसार, काली मिर्च में पाया जाने वाला पाइपरिन अग्नाशय यानी पेट के पाचन एंजाइमों को उत्तेजित कर पाचन क्षमता को बढ़ाने में मदद कर सकता है। वहीं, अन्य शोध से पता चलता है कि काली मिर्च से चैक्रियाटिक लाइपेज, काइमोट्रिप्सिन और एमिलेज की गतिविधियों को बढ़ावा मिल सकता है। इन सभी को डाइजेस्टिव

एंजाइम के रूप में जाना जाता है। इनसे पूरी पाचन प्रक्रिया बेहतर तरीके से काम कर सकती है।

वजन कम करने में सहायक

काली मिर्च खाने के फायदे वजन कम करने के लिए भी हो सकते हैं। इस संबंध में किए गए एक मेडिकल रिसर्च के दौरान कुछ हफ्तों तक काली मिर्च युक्त खाद्य



पदार्थ का सेवन किया गया। इससे भूख में किसी तरह का बदलाव हुए बिना शरीर में फैट और लिपिड का स्तर कम मापा गया। इससे शरीर का वजन कुछ कम हो सकता है। यह सब काली मिर्च में मौजूद पाइपरिन और एंटी-ओबेसिटी प्रभाव की वजह से ही संभव हो पाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि काली मिर्च के औषधीय गुण के कारण वजन कम हो सकता है।

आंत स्वास्थ्य के लिए

पेट व आंतों से जुड़ी समस्याओं के लिए भी काली मिर्च का उपयोग किया जा सकता है। इससे संबंधित एक वैज्ञानिक

शोध में आंत में मौजूद फेकल बैक्टीरिया के खिलाफ कई जड़ी-बूटियों के प्रीबायोटिक प्रभाव पाए गए। इससे पेट व आंतों में समस्या उत्पन्न करने वाले हानिकारक बैक्टीरिया को खत्म किया जा सकता है। इन जड़ी-बूटियों में काली मिर्च भी शामिल है। इसके अलावा, यह पाचन और गैस्ट्रिक की समस्या से भी छुटकारा दिला सकती है, जिनका गलत असर आंत

स्थिति में राहत पहुंचा सकता है।

इंफेक्शन से बचने के लिए

शरीर या त्वचा में इंफेक्शन फैलने का मुख्य कारण बैक्टीरिया होता है। ऐसे में इंफेक्शन की समस्या से छुटकारा पाने के लिए बैक्टीरिया से छुटकारा पाना जरूरी है। इसके लिए, काली मिर्च का उपयोग किया जा सकता है। एनसीबीआई की वेबसाइट पर मौजूद एक वैज्ञानिक रिसर्च के अनुसार, काली मिर्च में एंटीबैक्टीरियल गुण होता है, जो ई.कोलाई और स्टेफिलोकोकस ऑरियस जैसे कई बैक्टीरिया को दूर रखने का काम कर सकता है।

एंटीऑक्सीडेंट

शरीर में फ्री रेडिकल्स (मुक्त कणों) का निर्माण मेम्ब्रेन द्वारा लिपिड के ऑक्सीकरण के कारण होता है। इन फ्री रेडिकल्स के कारण कई बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में ऑक्सीकरण की प्रक्रिया को रोकने लिए काली मिर्च में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि मदद कर सकती है। इससे फ्री रेडिकल्स की समस्या को दूर रखा जा सकता है और गंभीर बीमारी से बचा जा सकता है।

मस्तिष्क के लिए

काली मिर्च के फायदे मस्तिष्क के लिए भी हो सकते हैं। दरअसल, काली मिर्च में मेथनॉलिक अर्क और एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जो अल्जाइमर जैसे मानसिक रोग से राहत पहुंचा कर याददाश्त को बढ़ाने का काम कर सकते हैं। साथ ही एंटीऑक्सीडेंट गुण, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस की समस्या से निजात दिला सकते हैं।

धूम्रपान छोड़ने में मदद करे

जो लोग धूम्रपान छोड़ना चाहते हैं उनके

लिए काली मिर्च का उपयोग मददगार साबित हो सकता है। एक स्टडी में यह बात सामने आई है कि काली मिर्च पाउडर की भाप लेने से धूम्रपान की तलब को धीरे-धीरे नियंत्रित किया जा सकता है। इस संबंध में अभी और वैज्ञानिक शोध की आवश्यकता है।

त्वचा के लिए

काली मिर्च के फायदे त्वचा के लिए भी हो सकते हैं। दरअसल, काली मिर्च के उपयोग से बने तेल में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो त्वचा को स्वस्थ रखने का काम कर सकते हैं। इसके अलावा, यह एंटी एंजिंग की तरह काम कर सकता है, मुंहासे कम कर सकता है और विटिलिगो, झुर्रियों व काले धब्बे को कम करने का काम कर सकता है।

काली मिर्च के नुकसान

काली मिर्च खाने के फायदे और नुकसान दोनों हो सकते हैं। नीचे हम इसके नुकसान के बारे में भी बता रहे हैं :

काली मिर्च का अधिक सेवन करने से पेट में जलन हो सकती है। काली मिर्च को आंखों के संपर्क में न आने दें। इससे आंखों में जलन हो सकती है।

इसमें हमने काली मिर्च के फायदे को वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर बताने की कोशिश की है। यह मिर्च इतनी गुणकारी है जो सदियों से कई समस्याओं के इलाज में सहायक रही है। फिर भी इसे किसी समस्या का सटीक इलाज न समझें। अगर कोई किसी गंभीर समस्या से जूझ रहा है, तो समय गंवाए बिना डॉक्टरों के इलाज का सहारा लें।



माउण्ट आबू-राज. ब्रह्माकुमारीज के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा ईस्ट और नॉर्थ ईस्ट जोन के एन.डी.आर.एफ. पर्सनल्स के लिए 'इंटेक्शन ऑफ स्ट्रेस एंड इनहेसिंग इनर स्ट्रेथ' विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एनडीआरएफ पर्सनल के 1बटालियन हेड क्वार्टर गुवाहाटी, 2बटालियन हेड क्वार्टर कोलकाता, 9बटालियन हेड क्वार्टर पटना व 12 बटालियन हेड क्वार्टर ईटानगर, एनडीआरएफ ट्रेनिंग एकेडमी नागपुर व एनडीआरएफ हेड क्वार्टर दिल्ली के 850 एनडीआरएफ पर्सनल्स ने भाग लिया। डॉ. ई.वी. स्वामीनाथन, मुम्बई, राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू, लेफ्टिनेंट कर्नर विकास चौहान, जबलपुर, कमाण्डर शिव सिंह, दिल्ली, ब्र.कु. कमला, दिल्ली, ब्र.कु. दीपा, मुम्बई तथा ब्र.कु. शैलेन्द्र, माउण्ट आबू ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया।



इंदौर-कालानी नगर। पुलिस रडियो ट्रेनिंग स्कूल कैम्पस में ट्रेनिंग ले रहे पुलिस कर्मियों को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् समूह चित्र में इंस्पेक्टर गोपाल लालचंदानी, ब्र.कु. सुजाता बहन, ब्र.कु. कविता बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. संध्या बहन, ब्र.कु. वैभव भाई तथा अन्य पुलिसकर्मी।



मरोली-नवसारी(गुज.)। सेवाकेन्द्र पर श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव में आयोजित चैतन्य झाँकी के साथ मरोली कस्तूरबा आश्रम के आचार्य महेश भाई पटेल, शिक्षक वसावा साहेब, ब्र.कु. मुकेश बहन तथा अन्य।



सुन्नी-शिमला। तृतीय वार्षिक आध्यात्मिक सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. प्रमोद शर्मा, प्रदेश भाजपा कार्यकारी सदस्य एवं बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के सह संयोजक, अहमदाबाद गुज. से ब्र.कु. नेहा बहन, माउण्ट आबू से राजयोगी ब्र.कु. प्रकाश भाई, गोपी भाई, सुन्नी उप सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. शकुंतला बहन, ब्र.कु. राकेश भाई, शिमला से ब्र.कु. रजनी बहन, अपरा फिल्लौर से ब्र.कु. ज्योति बहन, अहमदाबाद से ब्र.कु. नंदा बहन, जालंधर से ब्र.कु. तृप्ता बहन, ब्र.कु. मनीषा बहन आदि शामिल हुए।



मुम्बई-घाटकोपर। ज्ञान चर्चा के पश्चात् स्लम रिहबिलिटेशन अथॉरिटी के सी.ई.ओ. सतीश लोखंडे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकु बहन।



बेलथरा-उ.प्र। विधायक धनन्जय कुमार कन्नौजिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वतीका बहन।



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। बार एसोसिएशन प्रेसीडेंट गुरजीत सिंह ने ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा वैक्सीन कैप का उद्घाटन करवाया। इस मौके पर ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. विद्या बहन, ब्र.कु. सुदर्शन बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मोकामा-बिहार। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित चैतन्य झाँकी के साथ ब्र.कु. निशा बहन तथा अन्य।

रिश्तों में समस्या होने का कारण हमें जानना चाहिए

आज हमारा लोगों के साथ जैसा रिश्ता होना चाहिए वैसा नहीं है, चाहे वह रिश्ता खुद के साथ हो, लोगों के साथ, संबंधियों के साथ या काम के क्षेत्र में। सारे दिन में हम बहुतों से पूछते हैं क्या हाल-चाल है? आज हम खुद से पूछते हैं मेरे रिश्तों का क्या हाल-चाल है। जैसा चाहते हैं वैसा चल रहा है या कुछ बदलना है। मेरे रिश्तों में गांठें क्यों पड़ती हैं। हर रिश्ते को देखें तो जहाँ जैसी ऊर्जा चाहिए वैसी नहीं है।

क्या कारण है जो वो रिश्ता ठीक नहीं है। किसने क्या किया, क्या कहा, क्या कारण है कि वो ठीक नहीं है। पुरानी कोई बात या रोज़ होती हुई कोई बात। अगर ये ठीक हो जाए तो मेरा ये रिश्ता ठीक हो जाएगा। क्या कारण है जिससे रिश्ते वैसे नहीं रहते, जैसे हमें चाहिए। बहुत से रिश्ते बहुत सुन्दर हैं। कुछ एक में छोटी-छोटी बातें आ जाती हैं। कुछ एक में थोड़ी बड़ी बातें भी आ जाती हैं। कुछ तो हमने तोड़ ही दिए हैं।

कुछ में गांठ छोटी थी, कुछ में थोड़ी बड़ी। कुछ से तो हम थक ही गए। हमने कहा ये रिश्ता ही मुझे नहीं चाहिए। तो ऐसी क्या बात होती है जो अच्छे चलते हुए रिश्ते में गांठ पड़ जाती है। हर चीज़ का एक महत्व है। आप जीवन में जो परिवर्तन लाएंगे, उससे उस स्थान की वायब्रेशन बन जाएगी। जो आपकी जगह बैठेगा उसका जीवन बदल जाएगा। यह हम सबपर निर्भर है। किस-किस को ऐसा लगता है कि हम बोलते कुछ हैं और वे समझते कुछ हैं।

फिर हम उनसे बोलते हैं कि नहीं, मैंने ऐसा नहीं ऐसा कहा था। उस बात को दोहराते हैं। फिर हम बोलते कुछ हैं, और वे समझते कुछ और हैं। जबकि बात तो यह है कि वे बोलते कुछ और हैं हम समझते कुछ और हैं। फिर उसके बाद हम कहते हैं हम आपको नहीं समझ सकते। तब हम कहते हैं हमारे बीच बहुत बड़ी गलतफहमी हो गई है कि हम एक-दूसरे को समझ ही नहीं पाते। लेकिन जरूरी ये है कि कई



डॉ. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

बार हम भी बोलना कुछ चाहते हैं, और बोलते कुछ और हैं। वो समझते कुछ और हैं, फिर वे बोलते कुछ और हैं। इससे साधारण चीज़ें भी जटिल हो जाती हैं। आपको कौन-कौन चाहिए जो आपके जैसा हो। वो भी सोचते होंगे कि आप भी हमारे जैसे बन जाओ तब घर ठीक हो

वो हमारे जैसे नहीं हैं। वो हम पर विश्वास नहीं करते या हम उन पर नहीं करते। कहाँ समस्या है?

जाएगा। वो हमारे जैसे नहीं हैं। वो हम पर विश्वास नहीं करते या हम उन पर नहीं करते। कहाँ समस्या है?

शक के साथ जीना, किसी पर विश्वास नहीं कर पाना, अपने आपमें अंदर दर्द देता है। उन्होंने क्या तोड़ा वो तो हम नहीं जानते लेकिन हमने अपने आपके लिए क्या तोड़ा ये जांच करना जरूरी है। मान लो हमने किसी के लिए नकारात्मक सोचा और उस सोच को रखकर हम चाहते हैं कि रिश्ता भी ठीक हो जाए। जबकि हमें मालूम भी है कि नहीं हो सकता लेकिन फिर भी हम अपनी सोच बदल नहीं पाते। माना हम सही हैं और दूसरा व्यक्ति गलत है।

किसी भी चीज़ के बारे में सोचेंगे, उस पर

काम करेंगे, तो वो ठीक हो जाएगा। लेकिन उस टूटे हुए को ही पकड़कर चलते रहेंगे और रोज़ उसके ऊपर घाव मारते रहेंगे तो वो ठीक होने की बजाए और बिगड़ता जाएगा। तो सबसे पहले जरूरी है कि लोग मेरे अनुसार चलें या लोग मेरे जैसा क्यों नहीं सोचते हैं। क्योंकि अगर वो हो जाए तब तो सारी समस्या खत्म हो जाएगी। मैं जैसा सोचूं आप भी वैसा सोचो।

अब मैंने सोचा था कि आप सब ऑफिस सुबह 10 बजे पहुंच जाएंगे। अभी 10:30 बज गए लेकिन लोग अभी भी आ रहे हैं। वो सही हैं कि मैं सही हूँ। मेरी उम्मीद वो सब नहीं सोचने वाले हैं। आपको 10 बजे ऑफिस पहुंचना था तो आपको ट्रैफिक जाम, सड़क, पार्किंग, रास्ता सबकुछ काउण्ट करके घर से जल्दी निकलकर 10 बजे से पांच मिनट पहले यहाँ पहुंच जाना चाहिए था।

मैं ऐसा इसलिए एक्सपेक्ट करती हूँ क्योंकि ये मेरी आदत है। और मुझे लगता है कि मेरी आदत सही है। और फिर इसलिए मुझे लगता है कि हरेक के पास यही आदत होनी चाहिए। अब जो-जो लेट आएगा, वो तो गलत है। और जो बहुत जल्दी आए वो भी गलत हैं। इतना जल्दी क्यों आ गए थे। तो सिर्फ लेट आने वाले गलत नहीं लगते। सभी अपनी-अपनी जगह पर सही हैं। इसको देखना है सारा दिन घर के अंदर। हरेक आत्मा के अलग-अलग संस्कार हैं।

मेरे अन्दर ये संस्कार बैठे हुए हैं कि 10 बजे सही समय है तो पूरी दुनिया एक तरफ और ये मेरा संस्कार एक तरफ। क्योंकि मुझे हर परिस्थिति में उस संस्कार के नज़रिए से ही दिखेगा। मुझे वो परिस्थिति आपके संस्कार के ज़रिए नहीं दिख सकती। क्योंकि मेरे पास वो संस्कार नहीं हैं। इसलिए हर आत्मा के विविध संस्कारों को समझकर ही हम घर-परिवार और अपने कार्य क्षेत्र पर सबसे साथ मधुर रिश्ता बना सकते हैं।



दुर्ग-छ.ग.। विधायक अरुण वीरा को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय पत्रिका व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रूपाली बहन व ब्र.कु. नेहा बहन।



आंवलखेड़ा-आगरा(टुंडला)। केन्द्रीय राज्य मंत्री के स्वागत समारोह में तीन हजार जनता को मंच द्वारा ब्र.कु. विजय बहन ने ईश्वरीय संदेश दिया। इस मौके पर ब्र.कु. तनु बहन, महिला मंडल मोर्चा अध्यक्ष व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



दिल्ली-हरिनगर। सेवाकेन्द्र पर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् प्रो. डॉ. डी.पी. सिंह, यू.जी.सी. चेयरमैन तथा उनकी धर्मपत्नी डॉ. कल्पना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी।



कायम गंज-उ.प्र.। राजयोगिनी ब्र.कु. मिथलेश बहन को सम्मानित करते हुए लायन्स क्लब की चेयरमैन स्नेह लता बहन व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर अभिनव सिंह।



राँची-झारखण्ड। जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन सुब्रत कुमार नंदा, जी.एम., नाबाई बैंक, सुभाष चंद्र गर्ग, डी.जी.एम., नाबाई बैंक, अमरजीत, एरिया मैनेजर, हुंडई, अशोक अग्रवाल, समाजसेवी, ब्र.कु. निर्मला दीदी आदि गणमान्य लोगों ने दीप प्रज्वलित करके किया।



पटना-बुद्धा कॉलोनी। एम्स, पटना में पैनिक डिस्टॉर्ड एंड एंजाइटी पेशेन्ट्स पर डी.एस.टी. सत्यम प्रोजेक्ट के अंतर्गत रिसर्च प्रोजेक्ट के दौरान समूह चित्र में बायें से शिवानी भारद्वाज, जे.आर.एफ., डॉ. कमलेश झा, प्रिन्सीपल इनवेस्टीगेटर, डीएसटी प्रोजेक्ट, एम्स, ब्र.कु. मृदुल, राजयोग शिक्षिका, योगा इंस्ट्रक्टर, एम्स तथा विनय कुमार, डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, एम्स।



बीदर-कर्नाटक। भगवंत खुबा, मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर केमिकल्स एंड फर्टीलाइज़र्स एंड मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर न्यू एंड रीन्यूएबल एनर्जी के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सुमंगला बहन, उपक्षेत्रीय संचालिका, ब्र.कु. सुनंदा बहन, संचालिका, शिव शक्ति भवन, रामपुरे कॉलोनी तथा गणमान्य लोगों सहित अन्य ब्र.कु. बहनें।



अमरेली-गुज.। जन्माष्टमी के अवसर पर 'श्री कृष्ण जीवन चरित्र के प्रसंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में डॉक्टर्स ग्रुप, लायन्स रोटरी क्लब ग्रुप तथा ब्र.कु. गीता बहन।



कोटडा सांगानी-राजकोट(गुज.)। शिव दर्शन प्रदर्शनी में गोंडल मार्केटिंग यार्ड के च्वाइस चेयरमैन कनकसिंह जाडेजा को परमात्म संदेश देते हुए ब्र.कु. तुषि बहन।



जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। अतुल गुप्ता, महाप्रबंधक, वाहन निर्माणों का भारत सरकार द्वारा प्रमोशन डायरेक्टर, ऑपरेशन, टुप कम्पटर्स लि. कानपुर किये जाने पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ उन्हें स्नेहिल विदाई दी गई। उन्हें सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भावना बहन। साथ हैं अंजलि गुप्ता, अध्यक्ष, महिला कल्याण संघ वाहन निर्माणों।



नवापारा-राजिम(छ.ग.)। छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध नृत्यांगना स्वर कोकिला आरु साहू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण भाई तथा ब्र.कु. पुष्पा बहन।

परमात्म ऊर्जा

बीमारी की सहज दवा....

खुशी की गोली और इंजेक्शन : ब्राह्मण बच्चे अपनी बीमारी की दवाई स्वयं ही कर सकते हैं। खुशी की खुराक सेकण्ड में असर करने वाली दवाई है। जैसे वह लोग पॉवरफुल इंजेक्शन लगा देते हैं तो चेंज हो जाते। ऐसे ब्राह्मण स्वयं ही स्वयं को खुशी की गोली दे देते हैं व खुशी का इंजेक्शन लगा देते हैं। यह तो स्टॉक हरेक के पास है ना! नॉलेज के आधार पर शरीर को चलाना है। नॉलेज की लाइट और माइट बहुत मदद देती है। कोई भी बीमारी आती है तो यह भी बुद्धि को रेस्ट देने का साधन है।

सूक्ष्मवतन में अ व य क बापदादा के साथ दो दिन के निमंत्रण पर अष्ट लीला खेलने के लिए पहुंच जाओ फिर कोई डॉक्टर की भी जरूरत नहीं रहेगी। जैसे शुरु में संदेशियां जाती थीं, एक या दो दिन भी वतन में ही रहती थीं ऐसे ही कुछ भी हो तो वतन में आ जाओ। बापदादा वतन से सैर कराते रहेंगे, भक्तों के पास ले जायेंगे, लण्डन, अमेरिका घुमा देंगे। विश्व का चक्र लगवा देंगे। तो कोई भी बीमारी कभी आये तो समझो वतन में निमंत्रण आया है, बीमारी नहीं ऑर्डर है।

कथा सरिता



प्राचीन काल में दक्षिण भारत में एक छोटे से आश्रम में एक साधु रहते थे। आश्रम में एक-दो ही शिष्य थे। वहाँ पर सभी प्रकार के लोग थे। सबका कोई न कोई उद्देश्य होता। कोई अपनी मनोकामना पूर्ण करने के इरादे से आता तो कोई साधु महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करने आता। एक दिन एक परिवार

साधु ने कहा - "पुत्र, एक दिन सभी को मरना है। मत रोओ पुत्र! ये दुनिया तो विनाश होनी ही है एक न एक दिन, इसके मोह से बाहर आओ। रोने से कोई लाभ नहीं।" इस प्रकार साधु महाराज ने उन्हें अनेकों उपदेश दिये। उन लोगों में पुनः जीवन

आश्रम में चारों ओर शांति छाई हुई थी। कहीं भी कोई नज़र नहीं आ रहा था। उस दम्पति का मुखिया साधु को आवाज़ देता अंदर की ओर बढ़ा। अंदर जाकर उसने देखा कि साधु आश्रम के एक कोने में बैठे रो रहे थे। यह देखकर उसके आश्चर्य में वृद्धि हुई। उसने पूछा - "क्या बात है महाराज! आप रो क्यों रहे हैं? क्या हो गया महाराज?"

साधु ने कहा - "मेरी बकरी मर गई...!" कहकर वे पुनः रोने लगे। दम्पति कुछ देर यह सोचता रहा - फिर पुनः बोला, परंतु महाराज! उस दिन तो आपने हमसे कहा था, यह जीवन आती-जाती है। एक दिन सभी को मरना है। रोने-धोने से कोई लाभ नहीं। फिर अब आप क्यों रो रहे हैं?"

इतना सुनते साधु ताव में आकर बोले - "तुम्हारा बेटा मेरा बेटा नहीं था, पर यह बकरी मेरी थी! इतना सुनते ही वह दम्पति उल्टे-पांव वापस लौट गये। उनकी समझ में आ गया कि सब का दुःख अपना दुःख होता है।

शिक्षा : दूसरों को उपदेश देना सरल होता है। पर अपने ऊपर जब कोई बात आती है तो उपदेश की सारी बातें धरी रह जाती हैं।

अपना दुःख



वहाँ रोता-पीटता आया। साधु महाराज ने उससे पूछा - "क्या बात है, तुम रो क्यों रहे हो?"

परिवार का मुखिया बोला - "साधु महाराज! हमारा इकलौता बेटा मर गया, हम दुखी हैं। हमारे घर का चिराग बुझ गया है, महाराज! हम जीना नहीं चाहते। हमें इस दुनिया के जंजाल से छुड़ाओ महाराज।"

की आशा का निर्माण हुआ।

वे साधु को जीवित रहने का आश्वासन देकर वापस लौट गये। इस घटना के कुछ दिनों पश्चात उस दम्पति के यहाँ एक और पुत्र ने जन्म लिया। इसकी खुशी में वह दम्पति एक दिन पुनः साधु महाराज के आश्रम में जा पहुंचे। वहाँ पहुंचते ही वो आश्चर्यचकित हो उठे। उन्होंने देखा कि

सिर्फ सर्विस में नहीं पुरुषार्थ में भी एवररेडी



ऐसा लक्ष्य रखना है जो कोई कमाल करके दिखाए। तब कहेंगे बड़े। जैसा-जैसा कर्म करेंगे वैसा-वैसा नाम पड़ेगा। अगर श्रेष्ठ काम करेंगे तो नाम पड़ेगा श्रेष्ठमणि। श्रेष्ठमणि को सर्व कार्य श्रेष्ठ करने पड़ते हैं। मन, वाणी, कर्म में सरलता और सहनशीलता यह दोनों आवश्यक हैं।

बच्चे बाप से बड़े जादूगर हैं। बाप से बड़े जादूगर इसलिए, जो बाप को बनाने चाहते वह बना सकते हैं। बाप के लिए तो गायन है कि जो चाहे सो बना सकते लेकिन वह कौन? बच्चे। अव्यक्त होते भी व्यक्त में लाते यह जादूगरी कहें? अव्यक्त होने के दिन नज़दीक हैं तब तो अव्यक्त की लिफ्ट मिली है। ज्ञान मूर्त और याद मूर्त दोनों में समान बनना है। जब चाहे तब ज्ञान मूर्त, जब चाहे तब याद मूर्त बनें। जितना जो खुद याद मूर्त हो रहता है उतना ही वह औरों को बाप की याद दिला सकते हैं। याद मूर्त बन सभी को याद दिलाना है। समय का इंतज़ार करती हो या समय तुम्हारा इंतज़ार करता है? समय के लिए अपने को इंतज़ार नहीं करना है। अपने को सदैव ऐसे ही एवररेडी रखना है। जो कभी भी समय आ जाये। इंतज़ार को खत्म करके इंतज़ाम रखना है। जब अपना इंतज़ाम पूरा होता है फिर इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं रहती। उसको ही कहा जाता है एवररेडी। सब में एवररेडी। सिर्फ सर्विस में नहीं, पुरुषार्थ में भी एवररेडी संस्कारों को समीप करने में भी एवररेडी।

विशेष स्नेह है इसलिए विशेष बनाने की बातें चल रही हैं। वृक्ष में जो पीछे-पीछे फूल और पत्ते लगते हैं वे कैसे होते हैं? पहले वाले पुराने होते हैं और पीछे वाले बड़े सुन्दर होते हैं। पीछे वाले

नर्म बहुत हैं। यहाँ नर्म में क्या है? जितना नर्म उतना गर्म। अगर सिर्फ नर्म होंगे कोई छीन भी लेगा। कोमल बनने के साथ कमाल करनी है। कोमलता और कमाल दोनों ही संग होने से कमाल कर दिखाते हैं? ऐसा लक्ष्य रखना है जो कोई कमाल करके दिखाए। तब कहेंगे बड़े। जैसा-जैसा कर्म करेंगे वैसा-वैसा नाम पड़ेगा। अगर श्रेष्ठ काम करेंगे तो नाम पड़ेगा श्रेष्ठमणि। श्रेष्ठमणि को सर्व कार्य श्रेष्ठ करने पड़ते हैं। मन, वाणी, कर्म में सरलता और सहनशीलता यह दोनों आवश्यक हैं। अगर सरलता है सहनशीलता नहीं तो भी श्रेष्ठ नहीं। इसलिए सरलता और सहनशीलता दोनों साथ-साथ चाहिए। अगर सहनशीलता के बिना सरलता आ जाती है तो भोलापन कहा जाता है। सरलता के साथ सहनशीलता है तो शक्ति स्वरूप कहा जाता है। शक्तियों में सरलता और सहनशीलता दोनों ही गुण चाहिए।

अभी की रिज़ल्ट में यही देखते हैं कि कहाँ सहनशीलता अधिक है, कहाँ सरलता अधिक है। अब इन दोनों को समान बनाना है। मधुरता भी चाहिए। शक्ति रूप भी चाहिए। देवियों के चित्र बहुत देखते हैं तो उसमें क्या देखते हैं? जितनी ज्वाला उतनी शीतलता। कर्तव्य ज्वाला का है, सूरत शीतलता की है। यह है अन्तिम स्वरूप।



तलेगांव-दाभाडे(महा.)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में कोरोना काल में हरणेश्वर हॉस्पिटल द्वारा की गई विशेष सेवाओं के लिए हॉस्पिटल के डॉ. श्रीकांत जातेगावकर, डॉ. ज्योति जातेगावकर तथा अन्य नर्सिंग स्टाफ को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. लता तथा ब्र.कु. नीलिमा।



राउरकेला-ओडिशा। सृष्टि न्यूज के 10वें वार्षिक महोत्सव समारोह में ब्र.कु. राजीव को समाज उत्थान के उत्कृष्ट कार्य के अंतर्गत नशा मुक्ति जागरूकता अभियान में निःस्वार्थ भाव से सेवाओं को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए प्रमोद सतपथी, एकजीव्युटिव डायरेक्टर पर्सनल एंड एडमिनिस्ट्रेशन, सेल, राउरकेला स्टील प्लांट एंड प्रफुल्ल सुनयनी, पूर्व डायरेक्टर, अर्बन कोऑपरेटिव बैंक, सुंदरगढ़ ने प्रमाण पत्र और ट्रॉफी से सम्मानित किया।



भुज-गुज। इन्टर व्हील क्लब ऑफ भुज वॉल सिटी के द्वारा विश्व शांति दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करने के पश्चात् ब्र.कु. रीना बहन को शॉल और सम्मान पत्र से सम्मानित करते हुए कल्पना बहन, प्रेसीडेंट, इन्टर व्हील क्लब, सेक्रेटरी नीता हालानी तथा अन्य साथी बहनें।



पटना-बिहार। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् मंगल पांडेय, स्वास्थ्य राज्य मंत्री को ईश्वरीय पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेहा बहन तथा ब्र.कु. ज्योत्सना बहन।



अयोध्या-उ.प्र.। राजेन्द्र सिंह पाठक, आई.आर.एस. असिस्टेंट कमिशनर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन व ब्र.कु. उषा बहन।



भोपाल-रोहित नगर(म.प्र.)। सेवाकेन्द्र पर श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव में आयोजित चैतन्य झाँकी के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीना बहन।



दुनिया में भाग्य की परिभाषा थोड़ी-सी अलग होती है। और भाग्य को लोगों ने अगर स्थूलता के आधार पर देखें तो चार आधार बनाये उसके। एक पहला सुख निरोगी काया माना तन का भाग्य, दूसरा मन का, तीसरा धन का और चौथा जन का। ये चारों भाग्य के पीछे सभी इस दुनिया में अपने-अपने तरीके से रहने की कोशिश करते हैं। उसको पल्लवित करते हैं, उसको पुष्पित करते हैं।

लेकिन परमात्मा ने हम सबको दिव्य बुद्धि प्रदान की है। वो दिव्यता आज के समय में पूरी तरह से कारगर है। दिव्य बुद्धि की सबसे बड़ी निशानी है कि व्यक्ति हमेशा राजी रहेगा। राजी किस बात में? कोई भी परिस्थिति में राजी रहेगा। कभी भी किसी भी बात में वो डिस्टर्ब नहीं होगा। क्योंकि जो व्यक्ति फुल टाइम मनन शक्ति के आधार से अपने जीवन को ज़िंदा रखता है। वो हर बात में ज्ञान की बातों से अपने आपको ठीक कर लेगा। कोई समझ की बात ला करके अपनी परिस्थिति को उसी अनुसार ढाल लेगा। गुह्य से गुह्य परिस्थिति, गुह्य से गुह्य राज्यों को वो अपने अन्दर समेटे हुए होता है। परमात्मा जब हम बच्चों को भाग्य दे रहे होंगे ये सोचने का विषय है, तो परमात्मा के इशारे और हम बच्चों के समझने के जो मायने हैं वो दोनों अलग-अलग हैं। परमात्मा कभी भी किसी बात को ईसिस्ट (जोर देकर) करके नहीं कहता। और हम मनुष्यों की नेचर है, हम सोचते हैं कि कोई गैरन्टी करे। तो परमात्मा का आराम से बात करना भी गैरन्टी ही है लेकिन उस बात को कौन समझ पाता है जो दिव्य बुद्धि वाला होगा, मनन शक्ति वाला होगा, जिसके अन्दर आत्मा का बल होगा। ऐसी आत्मायें ही हर समय, हर पल, हर क्षण परमात्मा द्वारा अपने आपको सुरक्षित महसूस करेंगी। तो दुनिया में जो कर्मभोग आता है, रोग लगते हैं, परेशानियां होती हैं जिसमें बहुत लोग अपने

आपको बहुत दुःखी करते हैं।

देखिए सुख क्या है, सुख उसे ही कहा जाता है जब व्यक्ति का सबकुछ ठीक चल रहा है, वो सुखी है तो बहुत बड़ी बात नहीं है। लेकिन उसका कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है फिर भी अपनी मनन शक्ति के आधार से उसमें से अपने कल्याण की बात निकालकर अपने को खुश रखते हैं, ये उसकी दिव्य बुद्धि की कमाल है। और ये

दिव्य बुद्धि

परमात्मा के, वरदाता के हम सबको बनाने का प्रमाण है कि हम सारे वरदानी हैं। हम कभी भी खाली अनुभव नहीं करेंगे। सदा अपने को सर्व खजानों से भरपूर करेंगे।

कहा जाता है कि जिस चीज की बार-बार चर्चा की जाती है वो चीज खूब बढ़ती चली जाती है। अगर कोई दुःख की चर्चा करेगा तो दुःख बढ़ जायेगा और अगर कोई सुख की चर्चा करेगा तो सुख बढ़ जायेगा। बीमारी की चर्चा करेगा तो बीमारियां और बढ़ती चली जायेंगी। उस कॉन्शियसनेस में हम, उस चीज को ठीक करने की बजाय और ज्यादा लोगों को परेशानी में डाल देंगे। तो दुनिया में जो पहला सुख है ना तन का, उस सुख को भी हम संकल्पों के बल से प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन कब जब हमारे

पास दिव्य बुद्धि का वरदान होगा।

ऐसे एक छोटा-सा उदाहरण है कि हम सबको पता है कि इन सारी चीजों से समस्याएं होती हैं। फिर भी हम माया के प्रभाव से कहो या इस दुनिया के आकर्षण में इतना ज्यादा आकर्षित हैं कि हमारा मन हमको कहता है कि खाओ। अब आप ये समझ लें कि जो चीज स्वास्थ्य के लिए खाई जाती है उसमें स्वाद नहीं होता। ऐसी पूर्ण मान्यता है और ये सत्य भी है। लेकिन जहाँ स्वाद है वहाँ स्वास्थ्य जायेगा लेकिन हम फिर भी खाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि हमारी बुद्धि कलुषित बुद्धि है। कलियुगी बुद्धि है। अगर वो दिव्य बुद्धि होती, मनन शक्ति वाली होती, समझदार होती तो उन सारी चीजों को अवॉयड करती जिन चीजों से हमारा हेल्थ जाता है। तो इससे आप सबसे पहले चेक कर सकते हैं। बड़ी चीजों से चेक करने की ज़रूरत नहीं है। सबसे छोटी चीजें कि आज हमें जो चीज अच्छी लगती है खाने में, वो चीज निश्चित रूप से हमारे लिए अच्छी नहीं हो सकती। क्योंकि स्वादेन्द्रियों का स्वाद लेना और उसके अन्दर जाकर उसका सारा प्रोसेस करना दोनों में ज़मीन-आसमान का फर्क है। जिसने जैसा अपने टेस्ट को बनाया है वैसा उनका शरीर अभी भी चल रहा है। लेकिन अगर हम राजयोगी परमात्मा के बच्चे हैं, हमें मनन शक्ति, दिव्य बुद्धि का वरदान अगर परमात्मा ने हमें दिया है तो क्या हम हेल्थ को भी ठीक नहीं रख सकते! तो हेल्थ कॉन्शियस होने से पहले, हेल्थ के ऊपर काम करने से पहले, सबसे पहले अपनी मनन शक्ति से अपने इस शरीर के एक-एक अंग को हमें देखना होगा। देखना होगा का ये मतलब नहीं है कि हम देखते तो डेली ही हैं ऐसा नहीं है कि नहीं देखते। रोज-रोज देखते हैं। लेकिन हमको इस अंग से सेवा करनी है। आँखों से सेवा करनी है, कान से सेवा करनी है, मुख से सेवा करनी है, हाथों से सेवा करनी है, पैरों से सेवा करनी है लेकिन जब ये अच्छे चलेंगे तभी तो कर पायेंगे ना! तो अगर खूब मनन करके हम इस चीज में कॉन्शियस हो जायें कि नहीं मुझे हेल्थ वाइज बहुत अच्छा रखना है, तो मैं सेवा में कभी भी विघ्न रूप नहीं बनूँगा। क्योंकि हेल्थ भी अगर हमारी डाउन होती है तो ये भी तो एक विघ्न का कारण बनता है ना! हमारे विघ्न आ जाते हैं हमारे सामने। अगर आज मेरी तबीयत ठीक होती तो मैं ये सेवा कर पाता। तो हर पल, हर क्षण हमको परमात्मा दिव्यता प्रदान कर रहे हैं लेकिन वो बढ़ेगी सिर्फ मनन शक्ति के आधार पर। तो परमात्मा की दी हुई दिव्य बुद्धि हम सबको वरदान है। और इसका प्रयोग करके हम हरेक पल, हरेक क्षण को सफल कर सकते हैं, सुजाग कर सकते हैं, और आगे बढ़ सकते हैं।



सोनीपत-हरियाणा। विधायक एम.एल. बड़ोली को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् टोली (प्रसाद) खिलाते हुए ब्र.कु. प्रमोद बहन व ब्र.कु. सुनीता बहन।



मोतिहारी-बिहार। भूकम्प का सफल पुर्वानुमान करने वाले वैज्ञानिक उमेश कुमार वर्मा का सेवाकेन्द्र पर स्वागत एवं सम्मान करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विभा बहन। इस मौके पर ब्र.कु. अशोक वर्मा, अभियंता राज कुमार, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. शिव पूजन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मसौढ़ी-बिहार। जेल सुपरिंटेंडेंट ऑफ़र दत्त को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आभा बहन, ब्र.कु. सुरुचि बहन तथा अन्य।



बरानगर-कोलकाता (प.बंगाल)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आर.पी.एफ./मेट्रो रेलवे में 'स्ट्रेस एंड डिप्रेशन मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. किरण बहन व ब्र.कु. पिकी बहन को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए एस.के. परी,आई.जी. व अमरेश कुमार,डी.आई.जी.।



राघोपुर-बिहार। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के कमाण्डर राजन सिंघा एवं जवानों को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. बबिता बहन। साथ हैं ब्र.कु. संगम बहन, ब्र.कु. किशोर भाई तथा अन्य।



कोरापुट-ओडिशा। शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम में सम्मिलित सभी शिक्षकों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. स्वर्णा बहन।



नेपाल-महेन्द्रनगर। कंचनपुर जिले के आर्मी कैम्प में आर्मी ऑफिसर्स एवं जवानों को परमात्म संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. महिमा बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



धरी-गुज.। जन्माष्टमी पर आयोजित चैतन्य झाँकी के साथ ब्र.कु. भारती बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



बीदर-कर्नाटक। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में बंदेप्पा खशेमपुर,एम.एल.ए.,बीदर,साउथ, एस.एस. कादरी,कर्नाटक स्टेट जनरल सेक्रेटरी जे.डी.,साउथ, रमेश पाटिल सोलपुर,डिस्ट्रिक्ट प्रेसीडेंट जे.डी.,साउथ, अबिद अली,डिस्ट्रिक्ट यूथ वाइस प्रेसीडेंट जे.डी.,साउथ, राजयोगिनी ब्र.कु. सुमंगला बहन, ब्र.कु. सुनंदा बहन,संचालिका,शिव शक्ति भवन,रामपुरे कॉलोनी तथा अन्य।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी (म.प्र.)। इंजीनियर्स डे के अवसर पर पेजअप सॉफ्टवेयर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड में कार्यरत आई.टी. इंजीनियर्स के लिए ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'ईजी मेंडिटेसन फॉर बिजी इंजीनियर्स' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में कंपनी के डायरेक्टर अनूप राय, नेहा राय, ब्र.कु. विनीता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन तथा प्रतिभागी इंजीनियर्स।

परिवर्तन का प्रतिरोध इतना क्यों

अक्सर कभी किसी बात को परिवर्तन करने के लिए हमको कहा जाता है तो हम विभिन्न तरीकों से अपने अन्दर के प्रतिरोध को जताते हैं। लेकिन जब उसको कहा जाता है कि नहीं ये सही नहीं है, ये सारा कुछ आपके रिएक्शन है, आपकी प्रतिक्रियाएं हैं, जो आपको बदलने नहीं दे रही हैं। लेकिन कई बार क्या होता है सच्चाई से लोग इतना ज्यादा लड़ रहे होते हैं अन्दर की जो अधीरता है वो विरोध का सबसे बड़ा, दूसरा रूप है जैसे कोई भी चीज सीखना हो, बदलना है, उसके प्रति हमारा प्रतिरोध है या विरोध है कि जब हम ये मांग करते हैं कि वो अभी हो जाये, तुरन्त पूरा हो जाये तो हम अपने द्वारा उत्पन्न समस्या से जुड़े सबक को सीखने का समय नहीं देते। इसी तरह से कोई भी चीज इस दुनिया में नहीं बदल रही है उसका कारण है खुद को उस परिवर्तन के लायक या कहूँ उस परिवर्तन को न करने की इच्छा ही है। उसके कुछ संकेत भी बार-बार, बीच-बीच में हम देते रहते हैं। उसमें सबसे पहला संकेत होता है जैसे पहला

टॉपिक चल रहा हो किसी के सामने ही किसी का और उससे वो नाखुश हो तो वो तुरन्त उस विषय को बदल देगा। कमरा छोड़कर चला जायेगा, टाल-मटोल करेगा, किसी काम में व्यस्त हो जायेगा, या अलग खिड़की के बाहर देखने लग जायेगा, कोई पत्रिका पलटने लग जायेगा, जैसे कुछ चीजें उसके घर में बहुत ज्यादा खराब होने लग जाती हैं, कोई भी कार या नल ये सारा जो कुछ खराब होता है ये हमारा एक प्रतिरोध व्यक्त करने का तरीका है। आपको इस बात को बहुत गहराई से समझना है इसी तरह से कुछ कल्पनायें हम करते रहते हैं जैसे आपको पता है मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मैं कहीं ऐसे ही नहीं जाना चाहता, मैं परफेक्ट हूँ किसी थैरेपिस्ट के पास मैं नहीं जा सकता। मैं किसी को

परेशान नहीं करना चाहता। कुछ नहीं सब ऐसे ही ठीक हो जायेगा। ऐसी कुछ धारणाओं भी हमारे अन्दर हैं। धारणाओं में सबसे बड़ी धारणा है कि अगर कोई बहुत आध्यात्मिक है, आध्यात्मिक नहीं है लेकिन आध्यात्मिकता को लेकर उसके अन्दर बहुत-सी कुछ-कुछ बातें ऐसी होती हैं जैसे ये व्यक्ति आध्यात्मिक कैसे हो सकता है! क्योंकि ये तो बहुत गुस्सा करता है।



आध्यात्मिक लोग तो कभी गुस्सा करते ही नहीं हैं। ये बहुत समय लेगा, इसमें मैं बिल्कुल विश्वास नहीं करता। ये बिल्कुल भी ठीक नहीं है ऐसी कुछ-कुछ धारणायें हैं हमारे प्रबल जो हमारे विरोध को जताती हैं और हमारे को परिवर्तन करने नहीं देती। ऐसा कहीं भी, किसी भी जगह पर ऐसा रिएक्शन का कुछ लिखा नहीं

है। लेकिन धारणाओं में इतना पक्का है कि अरे ऐसे लोग ऐसे नहीं हो सकते। ऐसे लोग ऐसे नहीं हो सकते।

इसी तरह से अपने बारे में बहुत सारी धारणायें हमारे अन्दर हैं। जैसे बहुत ज्यादा आलसी हूँ, बहुत ज्यादा मूर्ख है, अयोग्य हूँ, ऐसे कुछ भी बहुत ज्यादा गरीब हूँ, ऐसी बहुत छोटी-छोटी अपने बारे में धारणायें हैं जो हमारे विचारों को रोकती हैं।

इसी तरह से कुछ डर हैं जो हमारे अज्ञात रूप से
अन्दर हैं लेकिन वो करने नहीं देते, जैसे मैं अभी तैयार

हैं वो किसी बात को लेकर हो, चाहे किसी व्यक्ति को लेकर हो, चाहे परिस्थिति को लेकर हो लेकिन वो परिवर्तन हम नहीं कर पा रहे हैं इसका कारण ये है कि हमें उस चीज़ की बहुत नीड है, उस चीज़ की आवश्यकता बहुत है। हम

चाहते हैं कि वो चीज हमारे हिसाब से हमेशा चले लेकिन ये असम्भव है। इसलिए किसी भी परिवर्तन का प्रतिरोध या विरोध हम सबको अन्दर से तोड़ देता है। हम पूरे जीवन इसी शैली के साथ जीना शुरू करते हैं और लास्ट तक शिकायत करते मर जाते हैं।

पर सबसे पहले क्या करना है जो चीज़ आपको अच्छी नहीं लग रही, जिस चीज़ में आपका विरोध चल रहा है, जो चीज़ आपको डिस्टर्ब कर रही है उस चीज़ से निकलने का सिम्पल और सीधा तरीका है... अपने आपको उन विचारों को देना जिन विचारों से हमारा मन खुश होता है। आप उस चीज़ को अवॉयड कर रहे हैं तो माना आप एक लक्षण पैदा कर रहे हैं विरोध का। तो आप किसी के साथ कैसे हैं ये मायने नहीं रखता लेकिन मायने ये रखता है कि आप किसी के सामने जाने से कैसा फील करते हैं, कैसा महसूस करते हैं। महसूसता की शक्ति बढ़ेगी तब जब हम जैसे हैं वैसे खुद को स्वीकार करने की कोशिश करेंगे। खुद को स्वीकार करने का अर्थ यहाँ ये है कि जो मेरे अन्दर विचार हैं वो मेरी खुद की उपज है। खुद के द्वारा ही हम अपने अन्दर हरेक चीज़ का विरोध करते हैं, हरेक चीज़ को पनपने देते हैं।

कौन क्या कर रहा है, कौन क्या नहीं कर रहा है
उससे हमारा लेना देना नहीं है, हमारा लेना देना ये है
कि वो हमारे हिसाब से क्यों नहीं कर रहा है। ये
असम्भव है इसलिए परिवर्तन करने के लिए, महसूसता
की शक्ति को पैदा करें और आगे बढ़ें।



ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन
को बदल दें



प्रश्न : मेरा नाम अनीता है। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है मैं क्या करूँ। मैं एक लड़के से प्यार करती हूँ और वो भी मुझसे बहुत प्यार करता है। लेकिन मेरे परिवार वाले इसे मंजूर नहीं कर रहे हैं। कृपया बतायें मैं क्या करूँ?

उत्तर : राजयोग तो सीधा-सा भगवान से प्यार करने का नाम है। इसमें भगवान से हम सब नाते भी जोड़ लेते हैं और एक नाता प्रियतम का भी है। प्रियतम पति को कहते हैं। प्रियतम का अर्थ है जो हमें अधिक से अधिक प्रिय हो तो भगवान को अगर हम ऐसा बना लें वो अधिकतम प्रिय है हमें। तो राजयोग की ये एक सुन्दर स्थिति है। देहधारियों से प्यार करना इससे तो मन कलुषित होता है। वास्तव में तो योग का प्रयोग इसमें नहीं हो सकता। क्योंकि देहधारियों से प्यार करने पर, जैसे आप उस लड़के से प्यार कर करती हैं तो सारा दिन आपको उसकी ही तो याद है। परमात्मा के स्वरूप पर स्थिर होना, उसकी याद में मग्न होना ये तो आपसे फिर हो नहीं पायेगा। इसलिए योगबल आपको इसमें किसी भी तरह से मदद कर ही नहीं पायेगा। इसलिए हमें समझ लेना चाहिए कि अगर योगबल का प्रयोग कोई भी वासनात्मक कार्य के लिए, कोई भी स्वार्थ से भरी चीज़ के लिए, किसी को कष्ट पहुंचाने की दृष्टि से हम करना चाहते हैं या फिर किसी से बदला लेने के लिए करना चाहते हैं तो उसमें योग बिल्कुल सफल नहीं होगा। और योग की जो शक्तियाँ हैं वो केवल जन कल्याण के कार्यों में ही सफल होती हैं।

इसमें ये ध्यान रखना है कि किसी की बीमारियां ठीक हों। समस्या भी मन को घेर रही है। किसी को रात को नींद नहीं आती है, किसी को डिप्रेशन हो गया है, बच्चे परीक्षा में सफल नहीं हो रहे। कोई में निराशा आ गई है और कोई सुसाइड करने की कगार पर है। ये जो बड़ी-बड़ी समस्यायें हैं इनमें योग का प्रयोग पूरा सफल होगा।

ऐसी स्थिति में आपको ज्ञान के बल की जरूरत है। हम जो प्रैक्टिस कराते हैं वो है स्वमान की प्रैक्टिस। जिससे मन बहुत मजबूत बन जाता है।

प्रश्न : मैं माधवी ओडिशा से हूँ। राजयोग का भी अभ्यास करती हूँ और मुस्ली व्लास भी रेगुलर है। मैं बी.एड. के एंट्रेंस एग्जाम की तीन साल से तैयारी कर रही हूँ, पर मुझे उसमें सफलता प्राप्त नहीं हो रही है। मैं इस वर्ष बी.एड. के एंट्रेंस एग्जाम में सफल होना चाहती हूँ। कृपया बतायें इसके लिए मैं क्या प्रयोग करूँ ?

उत्तर : मैं आपको ये कहना चाहूँगा कि पहले तो आप अपने मन में फुल कॉन्फिडेंस ले आये कि इस बार मैं अपना ये बी.एड. के एंट्रेंस एग्जाम क्लीयर कर लूँगी। अपने साथ ऐसा ईश्वरीय नशा ले लें। मेरे साथ स्वयं भगवान है। उसने मुझे सफलता का वरदान दिया है। रोज़ सवेरे उठकर 7 बार ये वरदान याद करेंगे। बाप स्वयं मेरे सामने खड़ा होकर मेरे मस्तक पर तिलक लगाकर मुझे वरदान दे रहा है कि बच्चे सफलतामूर्त भव। एक बार करके फिर सात बार इसे

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य



जस्ट रिपीट कर लें कि सफलता तो मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, सफलता तो मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। जब तक एग्जाम हो तब तक रोज़ इस तरह से 7 बार अभ्यास करें। और एक बार प्रैक्टिकल में अपने शिव बाबा से, अपने परम सद्गुरु से ये वरदान लेंगी और अपनी तैयारी बहुत अच्छी रखें। अपने कॉन्फिडेंस को बढ़ाना है। इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें कि इस बार तो बिल्कुल क्लीयर है मेरा। तो आप सहज ही सफल हो जायेंगी।

प्रश्न : मैं बिहार से हूँ और इंजीनियरिंग का स्टूडेंट हूँ। मुझे दिल्ली में ही आई.ई.एस. के एग्जाम की तैयारी के दौरान ये ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ। ये ईश्वरीय ज्ञान मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं ईश्वरीय सेवाओं में लग गया। लेकिन अब आई.ई.एस. का एग्जाम बहुत नज़दीक आ गया। सेवाओं में समय ज़्यादा देने के कारण मैं अपने एग्जाम की तैयारी नहीं कर पाया। तो मैं ऐसा क्या करूँ जो इस एग्जाम में सफल हो सकूँ?

उत्तर : आप इतना बड़ा एगजाम देने जा रहे हैं तो आपको पूर्ण रूप से उसपर ही फोकस करना चाहिए। सेवा आदि तो बाद में भी की जा सकेंगी। आपकी असली सेवा ये होगी कि जब आप इस एग्जाम में सफल होंगे तो लोग कहेंगे कि देखो राजयोग करने वाले सहज सफल हो गये। आपको इसके लिए ये अभ्यास करना होगा रोज़ सवेरे उठते ही एक विज्ञान

बनायेंगे, आई एम सिलेक्टेड। और इसको एन्जॉय करेंगे कि मेरा सिलेक्शन हो चुका है। मेरा एग्जाम क्लीयर हो गया है। बस इंटरव्यू देना बाकी है। वो भी क्लीयर होने जा रहा है। तो नेट पर अपना नाम देखें अपना नम्बर देखें कि रिजल्ट आ गया है। अपना नम्बर भी सेट कर सकते हैं कि कौन-सी पोजीशन आ गई। मेरा 50वां नम्बर आया है या 100वां नम्बर आया है ये भी सेट कर लें। हरेक व्यक्ति ये सोचे कि मेरा पहला नम्बर आ गया तो ये विज्ञान तो हरेक व्यक्ति सोच समझ कर करें। उस अनुसार मनुष्य को मेहनत भी करनी होती है। तो आप खूब मेहनत करें। लेकिन जैसा कि सबसे महत्वपूर्ण है सेल्फ कॉन्फिडेंस। जितना आपके अन्दर कॉन्फिडेंस होगा उतना ही ज़्यादा आप निर्भय बनेंगे। निर्भयता और कॉन्फिडेंस जब दोनों मिल जाते हैं तो मनुष्य हर एग्जाम को खेल की तरह एन्जॉय करता है। आपको सवरे उठकर ये अभ्यास ज़रूर करना चाहिए कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। विज्ञान भी बनायें, तैयारी भी अच्छी करें, भय भी निकाल दें। अगर आपको ये लगता है कि आप इसे पार नहीं कर सकेंगे तो भी आप फीयरलेसली एग्जाम दें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ़ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल



फुल स्टॉप और फरिश्ता स्थिति

एक फौजी को ऑर्डर हुआ तो सेकण्ड में तैयार हो जाता है। एक वाहन चालक गाड़ी में उपकरण को उचित समय पर और सही इस्तेमाल करता है। तब ही सुरक्षित गन्तव्य स्थान पर पहुंचता है। उनकी प्रैक्टिस इतनी हो जाती है कि वे बात करते-करते भी गड्ढा आने पर ब्रेक लगा देता है। मोड़ आने पर गाड़ी को मोड़ देता है। कहने का भाव यह है कि जब भी जैसा भी कार्य होना चाहिए वैसा ही करने का उनमें कौशल होता है।

इस तरह से हम हमारे मन को भी मोड़ सकें, स्टॉप कर सकें तो अहो सौभाग्य! क्योंकि आज मनुष्य दौड़ता ही जा रहा है। बस दौड़ता ही जा रहा है। कहाँ जाना है, क्यों दौड़ रहे हैं, नहीं पता। अन्जाम क्या होगा नहीं पता, बस दौड़ता ही जा रहा है। मन की गति भी वैसी ही है। मन को ऑर्डर मिले- स्थिर हो जाओ, रुक जाओ, तो क्या होता है देखो। क्योंकि आखिर मन पर विजय पाना, मन का सदुपयोग करना, यही तो हम सबका लक्ष्य है। क्योंकि मन से सुख है, मन से दुःख। ऐसी प्रैक्टिस के लिए परमात्मा हमें प्रेरित करते हैं। देखें वे हमसे कैसे चाहते हैं...

किसी भी कर्म में बहुत बिजी हो, मन-बुद्धि कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है, बन्धन में नहीं, सम्बन्ध में, लेकिन डायरेक्शन मिले- फुल स्टॉप। तो फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? यह करना है, यह नहीं करना है, ये ऐसे है, यह ऐसे है...। तो यह प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुल स्टॉप लगाने

पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा लें, सार स्वरूप बन जायें।

ऐसे नहीं, योग में बैठेंगे तो फुल स्टॉप लगेगा। हलचल में फुल स्टॉप। इतनी पॉवर फुल ब्रेक है? या ब्रेक लगायेंगे यहाँ और



ठहरेगी वहाँ! और समय पर फुल स्टॉप लगे, समय बीत जाने के बाद फुल स्टॉप लगाया तो उससे फायदा नहीं है। सोचा और हुआ। सोचते ही नहीं रहो कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, मेरे को फुल स्टॉप लगाना है और कुछ नहीं सोचना है, सोचते भी टाइम लग जायेगा। ये सेकण्ड का फुल स्टॉप नहीं हुआ। ये अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगड़ता नहीं है। फिर काम करना शुरू कर दो। लेकिन

हलचल में फुल स्टॉप लगता है या नहीं - ये चेक करो। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप नहीं लगाने देगा। और न्यारे-प्यारे होकर किसी भी कर्म सम्बन्ध में हो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा। क्योंकि बन्धन नहीं है। बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है लेकिन

न्यारे होकर सम्बन्ध यह - अन्डर लाइन करना। इसी अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे।

फरिश्तेपन की ड्रेस चमकीली ड्रेस है। यह स्मृति और स्वरूप बनना अर्थात् फरिश्ता ड्रेस धारण करना। यह फरिश्ता ड्रेस अर्थात् फरिश्ता स्वरूप दूर-दूर तक आत्माओं को आकर्षित करेगा। इसलिए शरीर भान से, मिट्टी की ड्रेस से न्यारे बन चमकीली ड्रेस पहनो, सफलता का सितारा बनो।



जम्मू। अश्विनी कुमार चौबे, केन्द्रीय राज्य मंत्री, उपभोक्ता मामले, खाद्य, सार्वजनिक वितरण और पर्यावरण, वन और जलवायु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन बहन। साथ हैं ब्र.कु. निर्मल बहन, ब्र.कु. रविंदर भाई तथा अन्य।



रतलाम-नजरबाग कॉलोनी(म.प्र.)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव में केक काटते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन तथा चैतन्य झाँकी के प्रतिभागी सभी बच्चे।



सिवानी मंडी-हरियाणा। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् आंगनवाड़ी सुपरवाइजर सुशीला बहन एवं सुपरवाइजर सुनीता बहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजिन्दर बहन एवं ब्र.कु. निर्मल बहन।



मुंदरा कच्छ-गुज. पशु रक्षा केन्द्र एंकर वाला अहिंसा धाम में ग्राम विकास एवं किसानों के लिए आयोजित विशेष कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए मयंक गांधी। मंचासीन हैं ब्र.कु. बाला साहब, मा.आबू, ब्र.कु. सुशीला बहन व अन्य।



अयोध्या-उ.प्र.। महंत जन्मेजय शरण जी महाराज को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन।



सैंधवा-म.प्र.। संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात् नगर पालिका अध्यक्ष बसन्ती बाई यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. छाया बहन एवं शिक्षा प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. प्रवीण भाई।



नामली-रतलाम(म.प्र.)। शिक्षक दिवस के अवसर पर नगर परिषद नामली में आयोजित 'शिक्षक सम्मान समारोह' में ब्रह्माकुमारीज को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किये जाने पर ब्र.कु. सविता दीदी को मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित किया गया।



मुम्बई-घाटकोपर। नवरात्रि पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी के अवलोकन हेतु महा. मंत्रालय में कृषि विभाग सह-सचिव रामचंद्र धनावडे, घाटकोपर वेस्ट की नगर सचिवका अर्चना भालेराव, बीजेपी की वार्ड अध्यक्ष विनया लार्ड, समाजसेवक, लेखक एवं गुरुकुल के ट्रस्टी भूपेन्द्र दोषी, ओशो संस्थान से स्वामी विठ्ठल जी आदि महानुभाव उपस्थित रहे। इस मौके पर आयोजित योग भट्टी कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. नलिनी दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति एवं शक्ति की अनुभूति कराई।



चारभुजा-राज. शिक्षक दिवस पर परमार्थ सेवा संस्थान चारभुजा द्वारा महेश्वरी सेवा सदन में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज की ओर से सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुनीता दीदी। कार्यक्रम में राजसमंद जिले के कांग्रेसी अध्यक्ष देवकीनंदन गुर्जर, सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधिकारी सोहन लाल रेगर, पूर्व उप जिला प्रमुख मदनलाल गुर्जर, स्वर्गीय हीरालाल देवपुरा महाविद्यालय आमेट के प्रोफेसर मांगीलाल मीणा, संत हरिदास जी, देवनारायण मीणा, बाबूलाल ऐचरा, कुबेर सिंह सोलंकी, कार्यक्रम प्रभारी सुंदर देवी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



टोहाना-हरियाणा। पतंजलि योग समिति से आई कन्याओं को समाज सेवा के लिए ब्र.कु. कौशल्या बहन तथा ब्र.कु. वंदना बहन द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अपूर्व फाउंडेशन से नेहा वर्मा, पूर्व उप प्रधान मंजू मेहता, समाज सेवी डॉ. शिव सचदेवा, निर्मला सचदेवा, डी.ए.वी स्कूल की प्रधानाचार्य माला उपाध्याय, कुरुक्षेत्र से आये महंत गोविंद आचार्य आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। महिला समाज सेवा समिति, तेरापंथ जैन सभा समिति से ऋतु जैन, आई.जी. कॉलेज से नेहा गर्ग, अधिवक्ता लाजवंती कटारिया, अधिवक्ता ऋतु गर्ग, डॉ. गुरबीना, यंग ब्लड चैरिटेबल ट्रस्ट से दीक्षा मेहता आदि को ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।



जिंतुर-महा.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा ग्रामीण रुग्णालय में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में रुग्णालय की मेडिकल ऑफिसर डॉ. चांडगे, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन तथा रुग्णालय के कर्मचारीगण।



खरगोन-म.प्र.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् भरत मोटर्स खरगोन के डायरेक्टर भूपेन्द्र यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. किरण बहन।

'युवाओं को गढ़ने में शिक्षकों की भूमिका' ऑनलाइन कार्यक्रम नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से बच्चों को संस्कारित करने की ज़रूरत : राज्यपाल



रायपुर-छ.ग.। शिक्षक दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के शिक्षाविद सेवा प्रभाग द्वारा 'युवाओं को गढ़ने में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार में झारखण्ड के राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि व्यक्ति को शिक्षित करने में शिक्षक के व्यावहारिक जीवन और आचरण का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए शिक्षक का जीवन समाज के आगे आदर्श रूप में होना चाहिए। आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की शिक्षा से मनुष्य का व्यवहार श्रेष्ठ और चरित्र महान बनता है। वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को शामिल कर बच्चों को अच्छी तरह सुसंस्कारित करने की ज़रूरत है। छत्तीसगढ़ के स्कूली शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेम साय सिंह ने कहा कि विद्यार्थी जीवन

कच्चे घड़े की तरह होता है, उसे हम जैसा आकार देना चाहें वह दे सकते हैं। इसीलिए विद्यार्थियों को बचपन से नैतिक शिक्षा देने की ज़रूरत है। खुशी की बात है कि ब्रह्माकुमारी संस्था बच्चों को नैतिक

चर्चा में... शिक्षक के श्रेष्ठ आचरण के साथ आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा को बढ़ावा देने पर दिया गया जोर

शिक्षा देकर चरित्रवान बना रही है। उच्च शिक्षा मंत्री उमेश पटेल ने कहा कि माता-पिता के बाद सबसे अधिक पूजनीय शिक्षक होते हैं। मेरे व्यक्तिगत चरित्र निर्माण में शिक्षकों का बहुत योगदान रहा

है। वर्तमान समय शिक्षा और शिक्षकों में नई टेक्नोलॉजी का उपयोग करने की ज़रूरत है। इंदौर की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा किसी को अच्छा डॉक्टर, इंजीनियर बना सकती है किन्तु वह उसे अच्छा इंसान नहीं बना सकती। आध्यात्मिकता के अभाव में उसके पास निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति, आत्मनियंत्रण की शक्ति और नैतिकता की शक्ति नहीं है। इंदिरा गांधी कृषि वि.वि. के कुलपति डॉ. एस.के. पाटिल ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। ईश्वर से पहले गुरु को प्रणाम करने की परंपरा हमारे देश में रही है। कदम-कदम पर बच्चे को मार्गदर्शन की ज़रूरत होती है। उसका सही मार्गदर्शन करना गुरु का काम है। शिक्षा मनुष्य को परिपूर्ण बनाती है।

राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी 'वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' लंदन द्वारा सम्मानित

मोहाली-पंजाब। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, संचालिका, राजयोग केन्द्र, मोहाली-रोपड़ क्षेत्र को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन द्वारा लॉकडाउन में कोरोना महामारी के दौरान मानवता के लिए लोक कल्याण में अपना अमूल्य योगदान देने हेतु 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' स्वीटज़रलैंड से सम्मानित किया गया।

संस्था व विशेष रूप से ब्र.कु. प्रेमलता दीदी को बधाई देते हुए कहा कि समाज सेवा के लिए ये हमारे प्रेरणास्रोत हैं। इनके प्रयासों से और भारत तथा पंजाब सरकार के सहयोग से कोरोना काल में पंजाब के लोगों की जो जानें बचाई जा सकी हैं, उसकी भारत व कैंनेडा के प्रधानमंत्री तक ने सराहना की है। डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके ने कहा कि ब्र.कु.



पंजाब के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री व वर्तमान विधायक बलबीर सिंह सिद्धू ने सुख-शांति भवन, फेज 7 मोहाली में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी को 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' स्वीटज़रलैंड प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। इस अवसर पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन के राष्ट्रीय सचिव डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके, ब्रह्माकुमारीज रोपड़ की संचालिका ब्र.कु. रमा दीदी, खरड़ की संचालिका ब्र.कु. भावना व ब्र.कु. नम्रता, ब्र.कु. अमन, ब्र.कु. रणजीत, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. जसबीर सिंह व विनोद भाई मंच पर उपस्थित रहे। मौके पर बलबीर सिंह सिद्धू ने ब्रह्माकुमारी

प्रेमलता दीदी ने कोरोना महामारी के दौरान विश्व स्वास्थ्य संगठन, भारत सरकार व राज्य सरकार के दिशानिर्देशों, सही खानपान व दवाइयों के साथ-साथ राजयोग द्वारा इम्युनिटी बढ़ाने की युक्तियों से हजारों की जान बचाई जिस कारण उन्हें इस सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट से सम्मानित किया गया है। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी ने डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके व बलबीर सिंह सिद्धू का धन्यवाद करते हुए कोरोना काल में की गई समाज सेवा का श्रेय अपनी ब्रह्माकुमारीज की मोहाली टीम को दिया तथा सभी लोगों को निःशुल्क राजयोग सीखने व अभ्यास के लिए प्रेरित किया।

परमात्मा नारी शक्ति द्वारा करा रहे विश्व परिवर्तन



इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के क्षेत्रीय मुख्यालय ज्ञानशिक्षर ओमशान्ति भवन न्यु पलासिया में नवरात्रि के शुभ अवसर पर नारी शक्ति के विभिन्न रूपों को दर्शाती चैतन्य देवियों की भव्य झाँकी का उद्घाटन अरविंदो मेडिकल युनिवर्सिटी के चॉसलर डॉ. मंजू भण्डारी, एम.वाय. हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. सलील भार्गव, डॉ. शांतनु भार्गव, भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय के एन.सी.एफ. के सदस्य डॉ. भरत शर्मा, हास्य कवि प्रो. राजीव शर्मा, यातायात के डी.एस.पी. संतोष उपाध्याय, टी.आई. दिल्लीप

सिंह परिहार, ए.आर.टी.ओ. श्रीमति अर्चना मिश्रा सोडानी, डायग्नोस्टिक के डायरेक्टर डॉ. राजेन्द्र सोडानी, आई.एम.ए. इंदौर की सचिव लायन डॉ. साधना सोडानी, ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. अनीता दीदी तथा ब्र.कु. उषा दीदी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. हेमलता दीदी ने बताया कि वर्तमान समय हम सबके परमपिता परमात्मा शिव इस धरा पर अवतरित होकर नारी शक्ति के द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य करा रहे हैं। इस मौके पर डॉ. बोस, डॉ. एस.डी. जोशी, डॉ. शारदा जोशी, डॉ. आनंद सिंघी, नवभारत समूह के प्रदेश हेड क्रांति चतुर्वेदी, स्वदेश के संपादक जितेन्द्र शर्मा सहित शहर के हजारों गणमान्य लोगों ने झाँकी का अवलोकन किया। विजयादशमी के अवसर पर संस्था सेवा सुरभि के अध्यक्ष ओमप्रकाश नरेड़ा, समाजसेवी राजेश गोयल, डॉ. मनोज झलानी, डॉ. शिल्पा देसाई आदि उपस्थित रहे। सभी ने देवियों का दर्शन कर, रावण का पुतला जलाकर स्वयं के भीतर बैठे विकारों रूपी रावण को भी समाप्त करने का संकल्प लिया।

आसुरी वृत्तियों की समाप्ति का महापर्व है नवरात्रि

सारंगपुर-म.प्र.। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा चैतन्य देवियों की झाँकी का सुंदर आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक एवं अनु. जाति प्रांत उपाध्यक्ष गौतम टेटवाल, विजयवर्गीय समाज के प्रांत अध्यक्ष ओ.पी.



विजयवर्गीय, लायंस क्लब के रीजन चेयरपर्सन महेश शर्मा, समाज सेवी ओम पुष्पद, रिटा. प्रिन्सीपल सत्यनारायण शर्मा, रिटा. प्रिन्सीपल पी.एस. पांडेय, अनिल गुप्ता, ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी, ब्र.कु.

प्रीति तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी दीदी ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि नवरात्रि पर्व सिर्फ शक्तियों की आराधना का पर्व नहीं, बल्कि परमात्मा शिव की शक्तियों

को स्वयं में धारण कर शिव शक्ति बनने का महापर्व है। अष्ट भुजा जो देवी को दिखाई गई है, उसका आध्यात्मिक रहस्य यही है कि हम अष्ट शक्तियाँ जैसे समाने की शक्ति, सामना करने की शक्ति, सहयोग की शक्ति, परखने की शक्ति आदि शक्तियों को अपने अंदर धारण करें। शक्ति स्वरूपा बन स्वयं के विकारों, दुर्गुणों एवं आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने का महापर्व नवरात्रि है।

नवरात्रि पर हुई राजयोग तपस्या

चित्तौड़गढ़-राज.। ब्रह्माकुमारीज के प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ सेवाकेन्द्र पर नवरात्रि के उपलक्ष्य में 'राजयोग तपस्या' कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. आशा दीदी ने बताया कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं, नारी का अपमान जहाँ शुरू हो जाये वहीं से पतन भी शुरू हो जाता है। स्वयं विश्व रचयिता, तीनों लोकों के स्वामी, सर्व आत्माओं के पिता भगवान शिव ने नारी शक्ति को सम्मान प्रदान किया है। शिव, शक्ति बिना कुछ नहीं और शक्ति भी बिना शिव के कुछ नहीं है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। राजयोग तपस्या में हम जब मन को उस



पिता परमेश्वर से जोड़ते हैं तो हम शिव-शक्ति स्वरूप का अनुभव करते हैं। परमपिता की सर्वोच्च शक्तियों के हम अधिकारी बन जाते हैं। जब नारी शक्ति शिव से जुड़ जाती है तो वो शिवशक्ति कहलाती है। इन्हीं शिव की शक्तियों से परमात्मा शिव सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करते हैं जिसका यादगार पर्व नवरात्रि हम मनाते हैं। विद्युत उत्पादन इंजीनियर संदीप जड़िया, बांसवाड़ा ने कहा कि जैसे विद्युत बिना उपकरण नहीं चलते हैं वैसे आज के तनाव भरे माहौल में राजयोग हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। मोबाइल रोज चार्ज करते हैं, वैसे ही हमें कुछ समय राजयोग का अभ्यास करना चाहिए। इससे कार्यक्षेत्र पर कार्य करते हुए हमें हल्केपन व तनाव मुक्त जीवन का अनुभव होता है। मैं पिछले 14 सालों से इस विश्वविद्यालय से जुड़ा हूँ। सुबह-शाम कार्य पर होते हुए भी कुछ समय राजयोग अभ्यास के लिए ज़रूर निकालता हूँ। मौके पर विकास अधिकारी नेहा परिहार व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।